



# अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

भिक्षु वाणी

धनवान होकर भी जो दान नहीं देता, वह दरिद्र है। उसका धन भारभूत है, केवल अहंकार बढ़ाने के लिए है।

• नई दिल्ली • वर्ष 24 • अंक 45 • 14-20 अगस्त, 2023



• प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 12-8-2023 • पेज: 12 • ₹10

## दो दिवसीय एनआरआई समिट का भव्य आध्यात्मिक आगाज

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी की सन्निधि में 96 देशों के 200 से अधिक श्रद्धालु हुए उपस्थित विदेश में रहते हुए भी जीवन में बना रहे धर्म-ध्यान का प्रभाव : आचार्यश्री महाश्रमण



04 अगस्त 2023  
नन्दनवन, मुंबई

अनंत आस्था के केन्द्र आचार्यश्री महाश्रमणजी ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि लगभग 2550 वर्ष पहले भगवान महावीर विद्यमान थे। एक बार भगवान महावीर से गौतम ने प्रश्न किया कि जो अन्य दर्शन को मानने वाले लोग हैं, उनमें यह अवधारणा है कि शील श्रेय है, श्रुत श्रेय है। भगवान ने कहा कि गौतम! ये बात जो अन्य लोग कहते हैं, वह मिथ्यावाद है। मैं अलग बात कहता हूँ। एक अवधारणा रही है कि ज्ञान करो, कल्याण हो जायेगा। दूसरी अवधारणा रही है- क्रियावाद। कोई कहता है ज्ञान या क्रिया एक कर लो, कल्याण हो सकता है। इन अवधारणाओं में परिपूर्णता नहीं है, ऐसा भगवती सूत्र के आधार पर प्रतीत होता है। ज्ञान और आचार दो तत्व हैं। ज्ञान है पर साथ में आचार नहीं है तो अपूर्णता है। जीवन में विद्वता है, यह एक पक्ष है। दूसरा पक्ष है कि आचरण कैसा है। दूसरे व्यक्ति का आचरण अच्छा है, पर ज्ञान नहीं है तो भी बढ़िया बात नहीं है। ज्ञान और आचरण दोनों ही ठीक नहीं हैं, तो आदमी दोनों पक्षों से कमजोर है। बढ़िया आदमी वह है, जिसमें ज्ञान और आचरण दोनों पक्ष मजबूत हैं। ज्ञान सम्यक् है तो आचरण अच्छा हो सकता है। सम्यक् आचरण के लिए सम्यक् ज्ञान

आवश्यक है।

‘पढ़मं नाणं तओदया।’ सम्यक्त्व विहीन आचरण सम्यक् नहीं हो सकता है। अभव्य जीव में तीन काल में सम्यक्त्व आ ही नहीं सकता। भले वो ऊपरी तौर से साधु भी बन जाये पर वो कभी मोक्ष जा ही नहीं सकता। सम्यक्त्व शून्य आचार है। कोरा श्रुत अपूर्णता है, कोरा शील अपूर्णता है। श्रुत और शील दोनों साथ में होंगे तो परिपूर्णता होगी। सम्यक्त्व नहीं है, तो कोरी क्रिया अनन्त काल तक कर लो मोक्ष नहीं होगा। ज्ञान और आचार दोनों सम्यक् होगा तो कल्याण हो सकेगा।

राष्ट्रसंत आचार्यश्री महाश्रमणजी की मंगल सन्निधि में शनिवार को 96 देशों के लगभग 200 से अधिक श्रद्धालुजन आध्यात्मिकता की खुराक लेने को उपस्थित थे। यह पहला अवसर था जब इतने देशों में रहने वाले श्रद्धालु एक साथ अपने आराध्य की अभिवंदना, अभ्यर्थना और आध्यात्मिक शांति की प्राप्ति के लिए उपस्थित हुए थे। अवसर था संस्था शिरोमणि जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय एनआरआई समिट का आयोजन। इस समिट में आस्ट्रेलिया, आस्ट्रिया, बेल्जियम, जर्मनी, हांगकांग, इण्डोनेशिया, कतर, सिंगापुर, स्विटजरलैण्ड, थार्सलैण्ड, युनाइटेड

किंगडम, युनाइटेड अरब अमिरात, युनाइटेड स्टेट ऑफ अमेरिका, बांग्लादेश व श्रीलंका से श्रद्धालु आध्यात्मिकता की खुराक प्राप्त कर अपने जीवन को उन्नत बनाने को उपस्थित थे।

मायानगरी मुम्बई का नन्दनवन आज मानों अप्रवासी भारतीय श्रद्धालुओं से गुंजायमान हो रहा था। हर रोज तो अपने देश के हजारों श्रद्धालु दिखाई देते थे, किन्तु शनिवार को भारत के अलावा 96 देशों में रहने वाले अप्रवासी तेरापंथी श्रद्धालु संस्था शिरोमणि जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के एनआरआई समिट में भाग लेने तथा अपने देव, धर्म व गुरु की निकट सन्निधि को प्राप्त करने के लिये नन्दनवन में उपस्थित थे।

तीर्थकर समवसरण के विशाल मंच पर भारतीय तिरंगे के साथ अन्य सोलह देशों के ध्वज व जैन ध्वज शोभायमान हो रहे थे।

समुपस्थित अप्रवासी श्रद्धालुओं को पावन संदेश प्रदान करते हुए आचार्य प्रवर ने फरमाया कि चार दृष्टियां प्राप्त होती हैं- द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव। इन पर ध्यान दिया जाये तो ज्ञान स्पष्ट हो सकता है। क्षेत्र-काल का भी अपना महत्व होता है। मनुष्य क्षेत्र में भी कितनी भूमियां हैं, जहां मनुष्य का निवास होता है। कुछ क्षेत्रों में धर्म का प्रभाव या अभाव हो सकता है।

आज तो एनआरआई समिट हो रहा है, जो तेरापंथी महासभा द्वारा भारत से बाहर रहने वाले लोगों को भी धर्म से जोड़े रखने का सुंदर प्रयास है। भारत से बाहर के देशों में साधु-संतों की संख्या भारत की तुलना में न के बराबर है। इस दृष्टि से वहां धर्म का इतना प्रसार नहीं होता होगा। भारत को धर्म क्षेत्र कहा जा सकता है।

परम पूज्य गुरुदेव तुलसी के समय समण श्रेणी के रूप में तेरापंथ धर्मसंघ को एक अवदान मिला, जिसके माध्यम से समणियां विदेश में धर्म प्रचार व संस्कार देने का प्रयास करती हैं। अब तो तकनीक आदि के माध्यम से गुरुओं की वाणी सुनने का भी अवसर मिल रहा है तो तकनीक से कुछ क्षेत्रीय निकटता हुई है, किन्तु एक टेलीविजन पर देखने और एक साक्षात देखने और अनुभव करने की बात अलग होती है। यह महासभा का बहुत सुन्दर उपक्रम है। इससे नई चेतना-नई जागरणा हो सकती है। बाहर रहने वाले लोगों से मिलना हो रहा है। वर्तमान साध्वीप्रमुखा ने भी पहले समणी रूप में रहते हुए विदेश

यात्रा भी की है। साध्वीवर्या भी समण श्रेणी में रही हुई हैं। मूल बात यह है कि विदेश में रहने पर भी जीवन में धर्म-ध्यान का प्रभाव बना रहना चाहिए। कोरी भौतिकता के युग में भी आदमी का दृष्टिकोण आध्यात्मिकता से परिपूर्ण रहे। कोरी भौतिकता चिंता, कुंठा में ले जा सकती है। इन दो दिन में आध्यात्मिक खुराक पाकर जीवन को धर्म से भावित बनाने का प्रयास होता रहे, वहां के बच्चों में भी धार्मिक प्रभावना होती रहे। महासभा ने अच्छा कार्य किया है, यह उपक्रम आगे भी चलता रहे। मंगलकामना।

पूज्यवर ने ललित कोठारी को 36 की तपस्या एवं शर्मिला मेहता, सुश्री हीना सिंघवी, सुशीला मेड़तवाल, चिराग छाजेड़ को उनकी तपस्याओं के प्रत्याख्यान करवाये। स्व. चन्दनमलजी बैद के परिवारजनों द्वारा ‘महक चन्दन की’ की पुस्तक का पूज्यवर की पावन सन्निधि में लोकार्पण किया। पूज्यवर ने आशीर्वचन फरमाया।

शेष पृष्ठ 3 पर







## सभी प्रकार के अहंकार से बचने का करें प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण



यह प्राप्त हो सकते हैं। विनय-वन्दना से अहंकार मंद पड़ सकता है। हमें किसी प्रकार से अहंकार नहीं करना चाहिये। गृहस्थ जीवन में भी अहंकार न हो तो व्यक्ति के मान-सम्मान की वृद्धि हो सकती है।

पूज्यवर ने कालूयशोविलास की विवेचना करते हुए पूज्य कालूगणी के मालवा यात्रा के प्रसंगों के अंतर्गत जावरा में हुए विरोध आदि को विस्तार से समझाया।

साध्वीवर्या संबुद्धयशाजी ने फरमाया कि हिंसा, चोरी, हत्या आदि कार्य करना बुरा कार्य है, पर आदमी इनसे निवृत्त नहीं हो सकता है। बड़ी गलतियां आदमी जानबूझकर जानते हुए भी करता है। कर्मशास्त्र में कहा गया कि मोह कर्म के उदय से व्यक्ति गलत कार्य करता है। आत्मा में विकृति पैदा होती है। मोहनीय कर्म का बड़ा परिवार है, जो गलत कार्य करवाता है। सभी प्रकार के कषाय मोहनीय कर्म के परिवार के सदस्य हैं।

मासखमण की तपस्या के क्रम में पूज्यवर ने प्रदीप कुमार मुणोत, सपना चपलोट, अरविन्द व सपना कोठारी को सजोड़े उनके तप के प्रत्याख्यान करवाये एवं अन्य तपस्याओं के क्रम में मीना कोठारी को उनकी तपस्या का प्रत्याख्यान करवाया। रिटायर्ड कर्नल उदयकुमार ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

होता है, अशुभ रूप में होता है, वह नीच गौत्र कर्म कहलाता है। इनको सार संक्षेप में कहा जाये तो निरंकार भाव उच्च गौत्र कर्म बंध का कारण है और मद-अहंकार भाव नीच गौत्र कर्म बंध का कारण है। अहंकार अनेक संदर्भों में हो सकता है। व्यक्ति को अपने कुल का अहंकार नहीं करना चाहिये। वर्तमान समय में जातिगत व्यवस्थाएं अलग-अलग होते हुए भी लोकतांत्रिक प्रणाली में जाति-कुल का महत्व नहीं है।

किसी व्यक्ति के पास शारीरिक बल अच्छा हो सकता है, किसी व्यक्ति का चेहरा सुंदर हो सकता है, किसी व्यक्ति की काया अच्छी हो सकती है लेकिन इन सभी के अहंकार से बचने का प्रयास करना चाहिये। कभी किसी को अच्छे धन की प्राप्त हो सकती है, अच्छा ज्ञान किसी को प्राप्त हो सकता है। इनके अहंकार से भी बचना चाहिये। जाति, कुल, बल, रूप, तप, श्रुत, लाभ और ऐश्वर्य का मद न करें। पुण्य से

### 03 अगस्त 2023 नन्दनवन-मुम्बई

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने भगवती सूत्र की विवेचना करवाते हुए फरमाया कि आठ कर्मों में सातवां कर्म गौत्र कर्म है। गौत्र कर्म भी पुण्य और पाप दोनों रूपों में होता है। वेदनीय नाम गौत्र और आयुष्य- ये कर्म पुण्यात्मक भी होते हैं, पापात्मक भी होते हैं। शेष चार कर्म एकान्तक पाप कर्म ही होते हैं।

गौत्र कर्म के दो प्रकार हैं- उच्च गौत्र और नीच गौत्र। उच्च गौत्र कर्म शरीर प्रयोग बंध कर्म के हेतु है- जाति का मद न करना, कुल का मद न करना, बल का मद न करना, रूप का मद न करना, तप का मद न करना, श्रुत का मद न करना, लाभ का मद न करना, ऐश्वर्य का मद न करना।

जो पुण्य के रूप में होता है, वह उच्च गौत्र कर्म कहलाता है और पाप के रूप में

## जैसा करना, वैसा भरना - कर्मवाद का सिद्धांत : आचार्यश्री महाश्रमण

### 04 अगस्त, 2023 नन्दनवन-मुम्बई

परम सुख की राह बताने वाले आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में बताया गया है आठ कर्मों में अंतिम कर्म अंतराय कर्म है। अंतराय कर्म शरीर प्रयोग बन्ध के कारण है- दानांतराय, लाभांतराय, भोगांतराय, उपभोगांतरा, वीर्यांतराय और अंतराय।

जैसा करना, वैसा भरना- यह कर्मवाद का सिद्धांत है। यदि कोई व्यक्ति दूसरों के कार्य में बाधा डालता है तो उसका कर्म उदय में आयेगा तो उसके भी बाधा आ सकती है। कर्म किया है, उसका फल भोगना पड़ता है। बंधे हुए कर्म भोगने से ही छुटकारा होगा अथवा तपस्या से उनकी

निर्जरा की जा सकती है। किसी को दान देने में अंतराय, विघ्न-बाधा डाली जाती है, तो दानांतराय कर्म का बंध हो सकता है।

दान के अनेक प्रकार हैं। अनेक रूपों में दान में बाधा डाली जा सकती है। दान लौकिक भी होता है और धार्मिक संदर्भों में भी होता है। ज्ञान-दान देना, संपत्ति को दान देना और अभयदान देना ये तीनों धर्मदान के प्रकार हैं। किसी भूखे को भोजन कराना, अन्न का दान देना, अर्थ का दान देना अथवा भूमि आदि का दान देना लौकिक दान है। दान के कुल दस प्रकार बताये गये हैं। लौकिक दान समाज स्तरीय होता है।

किसी के लाभ में बाधा डालने से अंतराय कर्म का बंध हो सकता है। दुर्भावना या प्रमाद से किसी के सुख में, भोजन में या नींद में विघ्न नहीं पैदा करना चाहिये। इससे भोगांतराय या उप-

भोगांतराय का बंध हो सकता है। किसी की शक्ति-सेवा प्रयोग में अंतराय देने से वीर्यांतराय कर्म का बंध हो सकता है। हम किसी के कार्य में अंतराय न दें। चाहे-अनचाहे किसी के अंतराय हमारे कारण से न लग जाये, इसका विशेष ध्यान रखना चाहिये।

कालूयशोविलास की विवेचना करते हुए परमपावन ने समझाया कि किस तरह पूज्य कालूगणी ने अपने व्याख्यान से विरोधी लोगों के चिन्तन में परिवर्तन कर दिया था। वडनगर मर्यादा महोत्सव पर अनेक क्षेत्रों के श्रावक-श्राविकाएं आते हैं।

पूज्यवर ने तपस्या करने वालों को उनकी तपस्याओं के अनुसार प्रत्याख्यान करवाये।

मुनि दिनेशकुमारजी ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया।

## देव आयुष्य बंध के चार कारण होते हैं : आचार्यश्री महाश्रमण

### 09 जुलाई 2023 नन्दनवन-मुम्बई

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने पावन पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र के आठवें शतक में देव आयुष्य कर्म शरीर प्रयोग बंध के चार कारण बताये गये हैं- सराग संयम, संयमासंयम, बाल तप कर्म और अकाम निर्जरा।

देव आयुष्य कर्म शरीर बंध का पहला कारण है- सराग संयम। चौदह गुणस्थानों में तीसरे गुणस्थान में आयुष्य कर्म का बंध नहीं होता। छठे गुणस्थान के बाद सातवें गुणस्थान से लेकर चौदहवें गुणस्थान तक आयुष्य कर्म बंध की प्रक्रिया नहीं हो सकती। सातवें गुणस्थान में भी आयुष्य कर्मबंध प्रारम्भ नहीं होता, समापन तो हो सकता है। इसके बाद आत्मा वीतराग बन जाती है। वीतराग के तो आयुष्य बंध की बात ही नहीं है। बारहवें गुणस्थान में चला गया तो मोक्ष में जाना ही है। ग्यारहवां, दसवां, नौवां, आठवां इन गुणस्थानों में जो आयुष्य बंध के कारण हैं, वो होते ही नहीं हैं। वहां राग-द्वेष का योग है नहीं। योग रूप में सराग है ही नहीं। छठे गुणस्थान में छहों लेश्याएं हो सकती हैं। अशुभ योग भी छठे गुणस्थान में हो सकता है।

श्रावक संयमासंयम होता है। जितना त्याग है उतना संयम। श्रावकत्व में देवगति का बंध हो सकता है। श्रावक या सम्यकत्वी नहीं फिर भी तपस्या करता है वह बालतपस्वी है। बिना मोक्ष की इच्छा के अकाम निर्जरा करने से देव आयुष्य का बंध हो सकता है। साधु तो या तो मोक्ष में जायेगा या देवगति के आयुष्य का बंध होगा।

साधु की साधुता का सर्वोत्तम परिणाम तो मोक्ष प्राप्ति का हो। आयुष्य का बंध हो ही नहीं, वह तो बढ़िया बात होगी। मोक्ष में ही जाना सर्वोत्तम बात है परन्तु ऐसे पाप कर्म न हो जाए कि नीची गति में जाना पड़े। परिणाम लेश्या अच्छी रहें, व्रतों के प्रति जागरूक रहें। नियम-व्रत में दोष लग जाये तो उसका प्रायश्चित्त ले लेना चाहिये। इसलिए सबकी आत्मा निर्मल रहे।

पूज्यवर ने कालूयशोविलास का सुमधुर विवेचन फरमाया। पूज्य कालूगणी के उदयपुर चतुर्मास सम्पन्नता के पश्चात के विहार प्रसंगों को विस्तार से समझाया। ८० वर्षों के अन्तराल के बाद तेरापंथ के आचार्य मालवा पधार रहे हैं, उस प्रसंग का भी उल्लेख करवाया।

श्रावक-श्राविका समाज में 9 अगस्त से ३9 अगस्त तक होने वाले नमस्कार महामंत्र के सवा कोटि जप अनुष्ठान का शुभारंभ पूज्यवर ने श्रीमुख से करवाया।

पूज्यवर ने मासखमण करने वाले तपस्वियों पिस्ता हिरण, तन्वी हिरण, संगीता सामोता, नवरत्नमल दूगड़, प्रकाश परमार, हीना बैगाणी, राजकुमारी दूगड़, प्रवीण गेलड़ा, प्रीति रांका, इंदिरा धींग, गौतम बोहरा को उनकी तपस्या के प्रत्याख्यान करवाये। अन्य तपस्वियों में अश्विन डागलिया, हेतल डागलिया ने अपनी तपस्या के प्रत्याख्यान लिये। संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

## जैन विद्या कार्यशाला का आयोजन

### बल्लारी

डॉ. मुनि पुलकितकुमारजी की पावन सन्निधि में जैन विद्या कार्यशाला रात्रिकालीन ट्रेनिंग क्लास का आयोजन तेरापंथ भवन में चल रहा है। तेरापंथ युवक परिषद बल्लारी के तत्वावधान में आयोजित कार्यशाला पूरे सवा महीने तक चलेगी, जिसमें मानव संस्कृति का क्रमिक विकास विषय से प्रारंभ होकर तीर्थंकर काल, जैन धर्म की प्राचीनता एवं प्रभाव, जैन धर्म और विज्ञान, जैन जीवन शैली, श्रावक के बारह व्रत, तेरापंथ की पृष्ठभूमि, तेरापंथ की तपस्वी संत परंपरा, हमारे प्रभावी जैन राजा, हमारे महान जैन आचार्य, दया-दान एक विश्लेषण आदि जैन इतिहास आगम ज्ञान एवं सिद्धांत-तत्त्वज्ञान से संबंधित महत्वपूर्ण विषयों पर डॉ. मुनि पुलकित कुमारजी द्वारा प्रश्न-उत्तर एवं विषयों पर विश्लेषण किया जा रहा है।

तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष पंकज छाजेड़ ने उपस्थित सहभागियों का स्वागत-अभिनंदन करते हुए सकल जैन समाज से आह्वान किया कि इस महत्वपूर्ण कार्यशाला में ज्यादा से ज्यादा संख्या में उपस्थित रहकर लाभ लें।





## पृष्ठ १ का शेष

### (विदेश में रहते...)

एनआरआई समिट के संदर्भ में इसके संयोजक व चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति-मुंबई के स्वागताध्यक्ष सुरेन्द्र बोरड़ पटावरी, सह संयोजक जयेश बड़ोला व महासभा के अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के संसारपक्षीय भाई सुजानमलजी दुगड़ की धर्मपत्नी एवं सोना देवी दुगड़ का कुछ समय पहले देहावसान हो गया था। सुजानमलजी एवं परिवारजन आज सम्बल प्राप्त करने हेतु पूज्यवर की सन्निधि में उपस्थित हुए।

पूज्यवर ने फरमाया कि जन्म लेने वाला मृत्यु को भी साथ लेकर आता है। समय आने पर वह प्रकट हो जाती है। यह शरीर अनित्य है, अशुचि है, आशाश्वत है।

मैं तो परिवार में तो बहुत थोड़ा रहा था। मैं तो छोटे परिवार को छोड़, बड़े परिवार में आ गया था। मेरे संसारपक्षीय दादाजी हुकमचन्दजी व पिताजी को देखा हुआ है। सोना बाई हमारी संसारपक्षीय बड़ी भोजाई थी। उन्होंने अपनी पुत्री का दान धर्मसंघ को दिया था। संसार में मां का बड़ा उपकार होता है। सुमतिप्रभा को भी मां को सेवा कराने का मौका मिला। मैं जब सुजानमलजी को देखता हूँ तो मुझे मोहनलालजी खटेड़ की स्मृति हो जाती है। इस वियोग की स्थिति में भी मानसिक समाधि में रहें। साध्वी सुमतिप्रभा व चारित्र्यशा भी सुजानमलजी को समय-समय पर आध्यात्मिक-धार्मिक प्रेरणा देती रहे। परिवार में खूब अच्छे संस्कार बने रहें। सुराणा परिवार भी है। भाईजी के ससुर सोहनलालजी ने मेरी दीक्षा की आज्ञा के समय सहयोग किया था।

भाईजी को भी धार्मिक-आध्यात्मिक समाधि रहे।

परिवार की ओर से सूरजमल दुगड़, श्रीचंद दुगड़, महेन्द्र दुगड़, मधु दुगड़, सुमन बोथरा ने एवं महासभा अध्यक्ष मनसुख सेठिया, मुंबई चातुर्मास व्यवस्था समिति प्रबंधक मनोहर गोखरू, मरुधर मित्र परिषद अध्यक्ष अशोक सिंघी, सरदारशहर नागरिक संघ अध्यक्ष विमल दूगड़, सुमतिचन्द्र गोठी ने दिवंगत आत्मा के प्रति मंगलभावना अभिव्यक्त की। पारिवारिक बहनों ने गीत के माध्यम से भाव व्यक्त किये।

स्व. सोना देवी दूगड़ की संसार पक्षीय पुत्री साध्वी सुमतिप्रभाजी एवं संसारपक्षीया भतीजी साध्वी चारित्र यशाजी ने दिवंगत आत्मा के संदर्भ में अपनी अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनिश्री दिनेशकुमार ने किया।

# मंत्र दीक्षा के विविध आयोजन

## सिलीगुड़ी

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में एवं तेरापंथ युवक परिषद सिलीगुड़ी के आयोजन में मंत्र दीक्षा का आयोजन हुआ। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुनि प्रशांतकुमारजी ने कहा- 'प्रातः उठते ही नवकार मंत्र का जप करना चाहिए, उसे अपना जीवन साथी बना लेना चाहिए। यह मंत्र नहीं अपितु शक्तिशाली महामंत्र है। मंत्र दीक्षा स्वीकार करने वाले ज्ञानार्थी वीतराग बनने का चिंतन करते रहें। श्रावक जीवन से आगे साधु जीवन में प्रवेश कर सिद्ध गति मोक्ष को प्राप्त करना हमारा लक्ष्य होना चाहिए। मनुष्य एवं देव गति से अधिक सुख मोक्ष गति में होता है। प्रतिदिन त्याग करते रहें, जिससे आसक्ति का भाव कम हो।'

मुनि कुमुदकुमारजी ने कहा- 'हमारे जीवन में संस्कार का बहुत महत्व है। बिना संस्कार के जीवन भारभूत बन जाता है। संस्कारी बच्चे भविष्य को सुखद बना देते हैं। ज्ञानशाला जीवन निर्माण की प्रयोगशाला है। ज्ञानशाला का ज्ञानार्थी ज्ञान अर्जन के साथ संयमी जीवन को समझने का प्रयास करे। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी अपने जीवन को इतना सुसंस्कारी बनाएं कि स्वयं, परिवार एवं धर्मसंघ का गौरव बढ़ जाए। मुझे वीतराग बनना है ये संकल्प प्रतिदिन दोनों समय तीन बार उच्चारण करना चाहिए।'

कार्यक्रम का शुभारम्भ मुनिश्री के मंगलमंत्रोच्चार से हुआ। तेरापंथ युवक परिषद् ने विजयगीत का संगान किया। पंजाबी पाडा एवं तेरापंथ भवन ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने प्रस्तुति दी। प्रीतम

बोकड़िया ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। आभार ज्ञापन प्रशांत छाजेड ने किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि कुमुदकुमारजी ने किया।

## सरदारशहर

साध्वी सुदर्शनाश्रीजी के सान्निध्य में नमस्कार महामंत्र द्वारा मंत्र दीक्षा कार्यक्रम की शुरूआत हुई। ज्ञानशाला की ज्ञानार्थी सुश्री भूमिका खटेड़ ने तुलसी अष्टकम से मंगलाचरण किया। कार्यक्रम में ज्ञानशाला के कुल ६८ बच्चे उपस्थित रहे। साध्वी सुदर्शनाश्रीजी ने बच्चों को मंत्र दीक्षा का महत्व समझाया। साध्वीश्री ने सभी बच्चों को त्रिपदी वंदना करवाई। अभातेयुप के निर्देशानुसार ६ वर्ष के आयु के ऊपर के बच्चों को मंत्र दीक्षा का संकल्प करवाया गया। बच्चों को नियमित रोज २७ बार नमस्कार महामंत्र बोलने के लिए प्रेरित किया गया। परिवार में बड़ों के चरण स्पर्श महत्व के बारे में बताया गया। साध्वीश्री ने मेमोरी पावर बढ़ाने के लिए महाप्राण ध्वनि आदि के प्रयोग करवाये। आभार ज्ञापन ज्ञानशाला की पूर्व संयोजिका संजू दूगड़ ने किया एवं कार्यक्रम का संचालन तेयुप के पूर्व मंत्री धीरज छाजेड़ ने किया।

## तिरुपुर

साध्वी डॉ गवेषणाश्रीजी के सान्निध्य में मंत्र दीक्षा का कार्यक्रम तेरापंथ युवक परिषद तिरुपुर द्वारा आयोजित हुआ। साध्वी डॉ गवेषणाश्रीजी ने फरमाया कि मंत्र दीक्षा से स्वयं की सुरक्षा होती है। मंत्र के

प्रति प्रगाढ़ श्रद्धा आवश्यक है। मंत्र दीक्षा भावी पीढ़ी में संस्कारों की चेतना जगाने का अच्छा उपक्रम है। साध्वीश्री ने शनिवार सामायिक का महत्व बताते हुए सभी को गुरु इंगित की आराधना करने को प्रेरित किया। साध्वी मयंकप्रभाजी ने कहा कि यदि शुभ भविष्य चाहते हैं तो मंत्र दीक्षा, संस्कार दीक्षा आवश्यक है।

बच्चों को हम पुस्तकीय ज्ञान के साथ-साथ, संस्कारों का ज्ञान भी देना आवश्यक है। बच्चों को अच्छे संस्कार देने का सबसे अच्छा माध्यम है ज्ञानशाला। साध्वी मेरुप्रभाजी एवं साध्वी दक्षप्रभाजी ने सुंदर गीतिका के माध्यम से अपने भाव प्रस्तुत किए। परिषद अध्यक्ष सोनू डागा ने कोयंबटूर, इरोड एवं तिरुपुर से समागत संभागीगण का स्वागत किया।

सभा अध्यक्ष अनिल आंचलिया ने बच्चों को अपने वक्तव्य से प्रेरणा दी। तिरुपुर ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा ज्ञानशाला की गीतिका एवं मंचीय प्रस्तुति दी गई। ज्ञानशाला कोयंबटूर द्वारा भिक्षु अष्टकम प्रस्तुत किया गया। साध्वीश्री द्वारा बच्चों को मंत्र दीक्षा के संकल्प ग्रहण करवाये गये। मंच संचालन अमन चोरड़िया द्वारा किया गया। मंत्री अंकित बोथरा द्वारा आभार ज्ञापन किया गया।

## मदुरै

तेरापंथ युवक परिषद्, मदुरै द्वारा मंत्र दीक्षा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कुल ३३ बच्चों ने भाग लिया। ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं ने नमस्कार महामंत्र के द्वारा कार्यक्रम का शुभारंभ किया। उपासक

## पृष्ठ १२ को शेष ...

इन तीन आराधनाओं के द्वारा हम मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं। धर्म से बड़ी कोई चीज नहीं है। अध्यात्म का विकास होते रहना चाहिये। इनके प्रति जागरूक रहना चाहिये। पूज्यवर ने एनआईआर समिट के संभागियों को सम्यक् दीक्षा ग्रहण करवायी।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने फरमाया कि दुनिया में भोग आशाश्वत है, हम इनके पीछे न दौड़ें। व्यक्ति अच्छे मार्ग पर जाना चाहता है, पर जा नहीं सकता, उसका कारण है- मोह। जन्म-मरण की परम्परा का मुख्य स्रोत मोहनीय कर्म है। व्यक्ति के आचार-विचार को दूषित करने वाला मोहनीय कर्म ही है। नकारात्मकता के भाव मोह कर्म से ही आते हैं। जो साधक धार्मिक प्रवृत्ति का होता है, वह अपने मोह को वश में करते हुए आगे बढ़ता है। बलदेव भी अपने भाई वासुदेव के प्रति मोह से आक्रांत होता है। मोहग्रस्त व्यक्ति यथार्थता को स्वीकार नहीं करता है। हम मोह से बचें। मोह कर्म का विलय होने पर हम आन्तरिक आनन्द को प्राप्त कर सकते हैं।

साध्वीवर्या संबुद्धयशाजी ने फरमाया कि इस लोक में सभी आत्माएं समान हैं, पर व्यवहार जगत में भिन्नताएं, असमानताएं और भेद है। भिन्नता से ही योग्यता की तारतम्यता होती है, पर हमें अहंकार नहीं करना चाहिये। संसारी अवस्था में सबसे ज्यादा अहंकार मनुष्य में होता है। अहंकार से चित्त अशान्त बन जाता है। अहंकार युक्त व्यक्ति पानी में तेल की तरह तैरता है। उसे सुगति प्राप्त नहीं हो सकती।

लंदन के अप्रवासी श्रद्धालुओं द्वारा प्रकाशित एक पुस्तक पूज्यवर के सान्निध्य में लोकार्पित की गई। पूज्यवर, साध्वी- प्रमुखाश्री ने आशीर्वचन फरमाया। हंसु भाई एवं राजेश भाई ने लंदन में जैन धर्म की प्रभावना के विषय में बताया। जितेन्द्र ढेलड़िया ने पुस्तक के बारे में जानकारी दी।

आचार्यश्री महाश्रमण दीक्षा के ५०वें दीक्षा कल्याण वर्ष के अवसर पर नंदनवन में नवनिर्मित 'महाश्रमण कीर्तिगाथा' म्युजियम के संदर्भ में महासभा के अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया ने अवगति प्रस्तुत की।

पूज्यवर से लता भरसारिया ने ३१ की तपस्या एवं सुरेन्द्र सोनी, मनीषा बरड़िया, जगदीश मादरेचा, चन्द्रा चोरड़िया व प्रियंका सिंघवी को उनकी तपस्या के प्रत्याख्यान करवाये। पूज्यवर ने मुंबई स्तरीय मंगलभावना समारोह पनवेल में करना स्वीकार किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

नेनमल कोठारी और उपासक धनराज लोढ़ा ने नमस्कार महामंत्र और अरिहंत देव के बारे में विस्तार से समझाया। बच्चों को मंत्र दीक्षा के संकल्प दिलाये गये। कार्यक्रम में तेरापंथ ट्रस्ट के अध्यक्ष ओमप्रकाश कोठारी, तेरापंथ सभा के अध्यक्ष अशोककुमार जीरावला, तेयुप अध्यक्ष अमृतलाल चोपड़ा, मंत्री राजकुमार नाहटा, तेममं निवर्तमान अध्यक्ष नैना पारख, मंत्री दीपिका फूलफगर आदि उपस्थित थे। प्रशिक्षिका बबिता लोढ़ा ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन अभातेयुप आयाम हिट युवा फिट युवा के राष्ट्रीय प्रभारी नितेश कोठारी ने किया।

## उधना

तेरापंथ युवक परिषद, उधना द्वारा मुनि उदितकुमारजी के सान्निध्य में मंत्र दीक्षा का आयोजन तेरापंथ भवन में हुआ। मुनिश्री ने बच्चों को झूठ न बोलना, ईमानदारी रखना एवं सरल होने के लिए विशेष प्रेरणा दी। मुनिश्री ने फरमाया कि जीवन में सरलता का बहुत महत्व होता है। सब कुछ जानते

हुए भी जो व्यक्ति सहज और सरल होता है वही आगे बढ़ पाता है। जो व्यक्ति सरल, निश्चल होता है, वह अध्यात्म के मार्ग पर आगे बढ़ सकता है। मुनिश्री ने आचार्य तुलसी द्वारा निर्दिष्ट मंत्र दीक्षा का महत्व बताते हुए इसे बच्चों के भीतर सुसंस्कारों के बीजारोपण का महत्वपूर्ण उपक्रम बताया। तत्पश्चात बालकों को विधिवत त्रिपदी वंदना करवाई, नमस्कार महामंत्र का अर्थ एवं महत्व समझाया। बच्चों ने मुनिश्री द्वारा मंत्र दीक्षा के संकल्प स्वीकार किए। इस आयोजन में तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष हेमंत डांगी, उपाध्यक्ष विनोद सिसोदिया, मंत्री विकास कोठारी, सहमंत्री रौनक श्रीश्रीमाल, संगठन मंत्री प्रकाश श्रीश्रीमाल, तेयुप प्रभागीगण एवं कार्यसमिति सदस्य, तेरापंथी सभा, तेरापंथ महिला मंडल एवं स्थानीय सभी सभा संस्थाओं के पदाधिकारीगण व सदस्यों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम की सुव्यवस्था संयोजक चंद्रेश लोढ़ा एवं सहसंयोजक प्रवीण गांधी एवं ज्ञानशाला परिवार के द्वारा हुई। कार्यक्रम का संचालन सहसंयोजक प्रवीण गांधी ने किया।



## मासखमण तप अभिनंदन के विविध आयोजन

### दिल्ली

मुनि कमलकुमारजी के सहवर्ती संत मुनि नमिकुमारजी ने ३५ की तपस्या सानंद सम्पन्न की। मुनिश्री की तप अनुमोदना में दिल्ली के श्रावक समाज एवं परिषद के सदस्यों द्वारा पचरंगी तप, उपवास, एकासन, सामायिक नवरंगी आदि से सहभागी बनने का प्रयास किया। इसी क्रम में मुनि कमलकुमारजी की विशेष प्रेरणा से तेयुप दिल्ली के ६९ सदस्यों ने उपवास के साथ तपस्वी मुनि नमिकुमारजी की तपस्या का अनुमोदन किया। पचरंगी तप को सफल बनाने में मिलन बोथरा का भी काफी सराहनीय सहयोग रहा।

### सिकंदराबाद

तेरापंथ भवन में साध्वी डॉ मंगल-प्रज्ञाजी के पावन सान्निध्य में मौन के साथ मासखमण साधक अत्तापुर प्रवासी श्रावक कमल कुमार बैद का अभिनंदन एवं अनुमोदन कार्यक्रम श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद के तत्वावधान में आयोजित हुआ। उपस्थित विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए साध्वी डॉ मंगलप्रज्ञाजी ने कहा- 'जैन साधना पद्धति में तप का अपना विशेष स्थान है। तप साधना करने वाले जिन शासन के साधु साध्वियों एवं श्रावक-श्राविकाओं का इतिहास भी बड़ा बेजोड़ है। तपस्या व्यक्ति के कर्मों को तो हल्का करती है। तपस्वी का आभासमंडल तेजस्वी बन जाता है। तप किरणें वातावरण को ऊर्जायुक्त बना देती हैं। तपस्या के द्वारा धर्म संघ की नीवें गहराती हैं। तन और मन स्वस्थ बनता है, समाधिस्थ बनता है।'

साध्वीश्रीजी ने आगे कहा कि आज भाग्यनगर में मासखमण के साथ मौन की आराधना करने वाले श्रावक कमल कुमार जी ने साहस का परिचय दिया है। तप की दिव्य साधना के लिए प्रबल संकल्प की जरूरत है, आत्मिक शौर्य की जरूरत है। तप की छेनी से व्यक्ति कर्मों के लोहबंधन को काटने में समर्थ होता है। तपस्या ऐसी चिकित्सा है, जो मात्र शारीरिक ही नहीं भावनात्मक और मानसिक रोगों से भी निजात दिलाती है। अनुभवात्मक आनंद प्रदान करती है।

साध्वी राजलप्रभाजी ने मंगलाचरण किया। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष बाबूलाल बैद ने तपस्वी का हार्दिक वर्धापन करते

हुए तप अभिनंदन पत्र का वाचन किया। मंत्री सुशील संचेती ने साध्वी प्रमुखाश्रीजी द्वारा प्रेषित संदेश का वाचन किया। महिला मंडल अध्यक्ष कविता आच्छा एवं तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष निर्मल दुगड़ ने अभिनंदन स्वर प्रस्तुत किए। मासखमण साधक की पुत्री प्रभा नाहटा ने स्वरचित कविता के द्वारा अपने पिताश्री को वर्धापित किया। तेरापंथ सभा के पूर्व अध्यक्ष राजकुमार सुराणा ने अपने भाव व्यक्त किये। तपस्या के अनुमोदन में साध्वीवृंद ने समूह गीत प्रस्तुत किया। तेरापंथ महिला मंडल की बहनों द्वारा मासखमण तप अभिनंदन पपेट शो कार्यक्रम दर्शकों के आकर्षण का केंद्र रहा। तेरापंथ सभा के वर्तमान अध्यक्ष एवं मंत्री सहित निवर्तमान अध्यक्षों एवं तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद द्वारा तपस्वी का सम्मान किया गया। साध्वीश्री ने तपस्वी भाई को तपस्या का प्रत्याख्यान करवाया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी सुदर्शनप्रभाजी ने किया।

### रायगंज

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि प्रशांतकुमारजी की पावन प्रेरणा से उदासर निवासी रायगंज प्रवासी विनीता चोपड़ा धर्मपत्नी पुखराज चोपड़ा ने (३९ उपवास) मासखमण तप संपन्न किया। यह संभवतः रायगंज तेरापंथ समाज का पहला मासखमण तप है।

तपस्विनी विनीता चोपड़ा महिला मंडल मंत्री मंजू देवी चोपड़ा की पुत्रवधु है। तपस्विनी ने इससे पूर्व भी अनेक उपवास, बेले, तेले, आयबिल की अट्टाई, एक से नौ तक के तप की लड़ी, ग्यारह, पखवाड़ा आदि तपस्याएं की है।

मासखमण तप अनुमोदना के अवसर पर आयोजित भक्ति संध्या रायगंज सभा अध्यक्ष सुंदरलाल चोपड़ा के निवास स्थान पर आयोजित की गई। भिक्षु भजन मंडली, दलखोला एवं रायगंज गायक मंडली द्वारा तपस्या की अनुमोदना हेतु बहुत सुंदर प्रस्तुतियां दी गईं। श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा रायगंज द्वारा प्रशस्त पत्र से तपस्विनी बहन का सम्मान किया गया। इस अवसर पर सभा अध्यक्ष सुंदरलाल चोपड़ा, मंत्री विमल सिंधी, अन्य पदाधिकारीगण, रायगंज के गणमान्यजन व श्रावक समाज की विशेष उपस्थिति रही। रायगंज तेरापंथ महिला मंडल ने १५ दिनों तक लगातार दोपहर में

तप अनुमोदना हेतु गीतो/भजनों द्वारा तपस्विनी के मनोबल को बढ़ाया। तेरापंथ महिला मंडल की टीम ने भी तपस्विनी बहिन का अभिनंदन पत्र द्वारा सम्मान किया। इस अवसर पर तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष विजया बाई तातेड, पदाधिकारीगण एवं महिला मंडल की बहिनें उपस्थित रही। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी बच्चों ने भी दोपहर में उपस्थित होकर तपस्विनी की अनुमोदना की।

विनीता चोपड़ा के मासखमण की संपूर्णता के अवसर पर तप संपूर्ति अनुष्ठान जैन संस्कार विधि से उनके निवास स्थान पर करवाया गया। इस कार्यक्रम में विजयनगर परिषद से कमलेश चोपड़ा ने संस्कारक की भूमिका का निर्वहन करते हुए निर्दिष्ट विधि विधान एवं मंगल मंत्रोच्चारण से कार्यक्रम को सम्पन्न करवाया। इस अवसर पर तेरापंथी सभा, तेरापंथ युवक परिषद, तेरापंथ महिला मंडल, साधुमार्गी संघ, दिगंबर जैन समाज सहित विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारीगण, श्रावक-श्राविका समाज तथा जैन समाज के सदस्यों की उपस्थिति रही। उपस्थित पारिवारिकजन, श्रावक-श्राविका समाज ने भी तप अनुमोदना हेतु त्याग प्रत्याख्यान के संकल्प लिये।

### साउथ कोलकाता

मुनि जिनेशकुमारजी के सान्निध्य में तथा तेरापंथी सभा के तत्वावधान में मासखमण तप अभिनंदन का कार्यक्रम तेरापंथ भवन में समारोहपूर्वक संपन्न हुआ। इस अवसर पर मुनि जिनेश-कुमारजी ने कहा आत्म साधना के चार सूत्र हैं- दान, शील, तप, भावना। तप भारतीय संस्कृति का प्राण तत्व है। तप साधना का उजला पक्ष है। तप संयम का शिखर है। तप इन्द्रिय विजय का सुगम पथ है। तप अध्यात्म का महान अनुष्ठान है और जीवन के उत्थान का मार्ग है। तप पुरस्कार के लिए नहीं प्रकाश के लिए करना है। यश, कीर्ति के लिए नहीं निर्जरा के लिए करना चाहिए। बहिन दुर्गा जयंतिलाल भंसाली व पद्मावती जितेन्द्र बोथरा ने मासखमण की तपस्या करके नया कीर्तिमान स्थापित किया है। नम्रता भंसाली ने भी अठाई तप का प्रत्याख्यान कर मासखमण तप की अनुमोदना की।

इस अवसर पर बाल मुनि कुणालकुमारजी ने तप गीत का संगान

किया। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी द्वारा तपस्वियों को प्रदत्त संदेश का वाचन क्रमशः महासभा के पूर्व मुख्य न्यासी भंवरलाल बैद व सभा के मंत्री कमल सेठिया ने किया। तप अभिनंदन पत्र का वाचन साउथ कोलकाता तेरापंथी सभा के अध्यक्ष विनोद चोरड़िया ने किया। तप अनुमोदना में हुकमीचंद डागा, नम्रता भंसाली ने अपने विचार व्यक्त किये। भंसाली परिवार व बोथरा परिवार की बहनों के द्वारा तप अनुमोदना गीत प्रस्तुत किया गया। मासखमण तपस्विनी दुर्गादेवी भंसाली एवं पद्मावती बोथरा का साउथ कलकत्ता तेरापंथी सभा द्वारा अभिनंदन पत्र, मोमेन्टो व संदेश पत्र प्रदान कर सम्मान किया गया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में श्रद्धालुजन उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंदजी ने किया।

### ट्रिप्लीकेन, चेन्नई

शासनश्री साध्वी शिवमालाजी के पावन सान्निध्य में पैसठिया यंत्र अनुष्ठान का भव्य आयोजन तेरापंथ भवन, ट्रिप्लीकेन में सानंद सम्पन्न हुआ। साध्वीश्रीजी के मंगलाचरण से अनुष्ठान प्रारंभ हुआ। साध्वी अमितरेखाजी ने कहा कि पैसठिया यंत्र अनेक विघ्न-बाधाओं का निवारण करने वाला है। लोगसस का पाठ इसका सिद्ध मंत्र है। इसमें २४ बॉक्स २४ तीर्थकरों की स्तुति के एवं २५वां बॉक्स सीमंधर स्वामी की स्तुति के रूप दबाया गया है। इस यंत्र में अंकित संख्याओं की ऊपर से नीचे, बायें से दायें एवं तिरछी जोड़ ६५ आती है। यह जैन धर्म का प्रभावशाली मंत्र और यंत्र है। इस अनुष्ठान में लगभग २५० श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं ने सहभागिता की।

इस अवसर पर तांबरम प्रवासी जवरीलाल बंब की पुत्रवधु एवं रणजीतकुमार की धर्मपत्नी पिकी बंब के मासखमण तप का अभिनंदन कार्यक्रम भी ट्रिप्लीकेन तेरापंथ भवन में आयोजित हुआ। ट्रिप्लीकेन तेरापंथ ट्रस्ट एवं सम्पूर्ण श्रावक समाज ने तपस्विनी बहन के मासखमण तप की अनुमोदना कर उनकी निरामय स्वास्थ्य की मंगलकामना अभिव्यक्त की।

तपोभिनंदन पत्र द्वारा तपस्विनी बहन का अभिनंदन किया गया। ट्रस्ट के मंत्री विजयकुमार गेलड़ा ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

## बारहव्रत कार्यशाला के आयोजन

### औरंगाबाद

मुनि अर्हतकुमारजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में तेरापंथ युवक परिषद्, औरंगाबाद की ओर से बारह व्रत कार्यशाला का सप्त दिवसीय आयोजन किया गया।

मुनि अर्हतकुमारजी ने उद्बोधन प्रदान करते हुए कहा कि समण संस्कृति का मूलभूत अंग है व्रत। जैन, बौद्ध आदि परंपराओं में जीवन के परिमार्जन की दृष्टि से व्रतों को अतिरिक्त मूल्य दिया गया है। उपभोक्ता वाले इस युग में भी जैन परिवारों में कुछ व्रतों को अनुष्ठान के रूप में स्वीकार किया जाता है। युग-परिवर्तन के बाद भी व्रतों के प्रति घनीभूत जन-आस्था उनके त्रैकालिक महत्व को उजागर करती है।

मनुष्य व्रत-चेतना के साथ आगे बढ़ेगा तो युगीन खतरों के बीच में भी अपने अस्तित्व को सुरक्षित रख सकेगा। श्रावक की पहली भूमिका है- सम्यक्त्व दीक्षा। सम्यक्त्व की पुष्टि के बाद श्रावक के द्वारा दूसरी भूमिका के रूप में व्रत दीक्षा स्वीकार की जाती है। व्रत दीक्षा का अर्थ है- असंयम से संयम की ओर प्रस्थान। एक गृहस्थ श्रावक पूरी तरह से संयमी नहीं हो सकता, पर वह असंयम की सीमा कर सकता है। इसी दृष्टि से भगवान महावीर ने उसके लिए बारह व्रत रूप संयम धर्म का निरूपण किया।

इस अवसर पर मुनि भरतकुमारजी ने अपने मधुर स्वर में व्रत दीक्षा के महत्व पर एक गीत प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम के सफल आयोजन हेतु तेयुप उपाध्यक्ष एवं बारह व्रत कार्यशाला प्रभारी नितेश सेठिया के साथ संपूर्ण तेयुप साथियों ने अथक परिश्रम किया।

### सैंथिया

बारह व्रत स्वीकरण कार्यशाला का आयोजन सैंथिया ऋषभ भवन में हुआ। उपाध्यक्ष मोहित सुराणा ने कार्यशाला का प्रारंभ किया। उपासक प्रकाश सुराणा ने बड़े सुंदर तरीके से उदाहरण देते हुए व्रतों को समझाया। अंत में अध्यक्ष अभिषेक छाजेड़ ने आभार प्रकट किया।





## अणुव्रत समिति सक्रिय होकर जन-जन तक अणुव्रत पहुँचाए

### नोखा

आचार्यश्री तुलसी क्रांतिकारी आचार्य थे। उन्होंने मानव मात्र के कल्याण हेतु 'अणुव्रत धर्म' स्थापित किया। छोटे-छोटे संकल्प व्यसनमुक्त, अस्पृश्यता निवारण, रूढ़िवादी उन्मुलन, चुनाव में शुद्धिकरण आदि जन-जन तक पहुँचे, आंदोलन चलाया। ७५वीं वर्षगाँठ अमृत महोत्सव पर इसकी विशेष गूँज होनी चाहिए। नोखा में भी घर-घर जागृति हो—यह उद्गार शासन गौरव साध्वी राजीमती जी ने कहे। अणुव्रत समिति राज्य प्रभारी विनोद बच्छावत ने वर्तमान में अणुव्रत की उपयोगिता-स्वच्छ राजनीति, प्रत्येक मंगलवार को संयम दिवस मनाना—मानव सुखी बने व्यापक जानकारी दी।

अणुव्रत समिति, नोखा अध्यक्ष जयश्री भूरा ने नए चुनाव जल्दी करवाने की घोषणा करते हुए वर्तमान की समस्या का समाधान अणुव्रत बताया। सभा उपाध्यक्ष इंद्रचंद्र बैद, परामर्शक निर्मल भूरा, तैयुप अध्यक्ष गजेंद्र पारख, मंत्री अरिहंत सुखलेचा, सदस्य हंसराज भूरा, महिला मंडल पूर्व अध्यक्ष मंजु बैद आदि ने अणुव्रत पर विचार रखे। साहित्य भेंट करके राज्य प्रभारी विनोद बच्छावत का सम्मान किया गया। संचालन इंद्रचंद्र बैद ने किया।

## संयम दिवस के बैनर का अनावरण

### सूरत

साध्वी त्रिशलाकुमारीजी तेरापंथ भवन, सिटीलाइट में चातुर्मासार्थ विराज रहे हैं। पूज्य गुरुदेव के निर्देशानुसार शनिवार का दिन सामायिक दिवस के रूप में मनाया जाता है। उसी प्रकार मंगलवार का दिन संयम दिवस के रूप में मनाने का आह्वान किया गया है। साध्वीश्री के सान्निध्य में अणुव्रत विचव भारती के निर्देशन में एवं अणुव्रत समिति ग्रेटर सूरत के तत्वावधान में आज संयम दिवस के बैनर का अनावरण किया गया।

इस अवसर पर उपस्थित विशाल जनमेदिनी को संबोधित करते हुए साध्वी त्रिशलाकुमारीजी ने कहा- 'मनुष्य जीवन दुर्लभ माना गया है। मनुष्य भव की प्राप्ति हेतु शास्त्रों में चार कारण बताए गए हैं- सरलता, विनम्रता, करुणा और सद्भावना। मनुष्य के जीवन में सरलता होनी चाहिए। जिसके स्वभाव में सरलता नहीं है, जो माया करता है, छल-कपट करता है, धोखा करता है, वह कभी भी सुखी नहीं हो सकता। उसे अगले भव में तिर्यच योनि में जाना पड़ सकता है। जीवन में विनम्रता अत्यंत जरूरी है। जो व्यक्ति उदंड होता है, अहंकार करता है, वह मित्रों को भी दुश्मन बना देता है। जीवन में सफल होने के लिए अनुकंपा, करुणा, दया भावना का विकास आवश्यक है। हमारी आत्मा जिस व्यवहार से दुःख की अनुभूति करती है, वैसा व्यवहार हमें भी दूसरों के साथ नहीं करना चाहिए। प्राणी मात्र के प्रति करुणा का भाव रखने वाला सुख-शांति को प्राप्त करता है। सफलता की प्राप्ति हेतु संयम और सद्भावनापूर्ण व्यवहार जरूरी है। किसी के प्रति ईर्ष्या भाव नहीं रखना चाहिए। ईर्ष्या ऐसी आग है, जिसके द्वारा दूसरा व्यक्ति तो जले या ना जले परंतु स्वयं की आत्मा जरूर जल जाती है। ईर्ष्या भाव अलसर, पैक्रियास विंति, डायबिटीज, कैंसर जैसी अनेक बीमारियां भी पैदा करता है।' साध्वीश्री ने जीवन चर्या में नैतिकता एवं संयम को स्थान देने की एवं मौन साधना की प्रेरणा दी।

साध्वी कल्पयशाजीजी ने सतरंगी तप में जुड़ने की बलवती प्रेरणा दी। अणुव्रत समिति ग्रेटर सूरत द्वारा संयम दिवस के बैनर का अनावरण किया गया। इस अवसर पर अणुव्रत विश्व भारती के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष राजेश सुराणा, गुजरात राज्य प्रभारी अर्जुन मेड़तवाल, राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य, अणुव्रत समिति सूरत के अध्यक्ष विमल लोढा, पूर्व अध्यक्ष विजयकांत खटेड़, मंत्री संजय बोथरा, पदाधिकारीगण, कार्यसमिति सदस्यों सहित अच्छी संख्या में श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित रहे।



## अभातेयुप योगक्षेम योजना

* अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
* श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
* श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
* श्री राकेश कठोतिया, लाडनू-मुंबई	5,00,000
* श्री रूपचंद्र कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
* श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
* श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
* श्री सुमतिचंद्र गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
* श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
* श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
* श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
* श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छपर-सिलीगुड़ी	5,00,000
* श्री बसंत नवलखा, बीकानेर	5,00,000
* श्री विमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर	5,00,000
* श्रद्धानिष्ठ श्रावक केशरीमल, अनिलकुमार, संजयकुमार, सुनीलकुमार चंडालिया (गंगापुर) सूरत	5,00,000



## अपने संस्कार : अपनी निधि जैन संस्कार विधि

### नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

#### गंगाशहर

गंगाशहर निवासी कुलदीप छाजेड़, पुत्र बिंदु-पवन छाजेड़ के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक राजेंद्र सेठिया, धर्मेन्द्र डाकलिया, देवेन्द्र डागा, भरत गोलछा, विनीत बोथरा ने विधि-विधानपूर्वक मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न करवाया।

किरण देवी छाजेड़ ने परिवार की ओर से तैयुप व संस्कारकों को आभार प्रकट किया। सहज ही मुनि श्रेयांस कुमार जी का पधारना हुआ और उनके मंगलपाठ के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

### नूतन गृह प्रवेश

#### सूरत

गंगाशहर निवासी, सूरत प्रवासी पूजा-अमित चोपड़ा व सारिका-नितेश चोपड़ा के नूतन गृह प्रवेश का शुभारंभ जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक विजयकांत खटेड़, मनीष कुमार मालू, विनीत सामसुखा, हिम्मत बम्ब, बजरंग बैद, अरविंद बाफना, नरेंद्र भंसाली, सतीश संकलेचा ने संपूर्ण विधि-विधान और मंगल मंत्रोच्चार के साथ कार्यक्रम संपादित किया।

आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान के उपाध्यक्ष किशनलाल बैद ने आभार व्यक्त किया। तैयुप नव निर्वाचित अध्यक्ष सचित चंडालिया व उपाध्यक्ष अभिनंदन गादिया ने शुभकामना प्रेषित की साथ ही मंगलकामना पत्रक व मंगलभावना यंत्र भेंट किया।

### पाणिग्रहण संस्कार

#### अहमदाबाद

हीरादेवी-हीरालाल चोपड़ा की सुपुत्री वंदना का शुभ विवाह चित्रा अशोक चोरड़िया के सुपुत्र दिव्यवर्धन के साथ जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक डालिमचंद्र नौलखा, अरुण बैद एवं बाबूलाल चोपड़ा ने संपादित करवाया।

परिषद की ओर से चोरड़िया परिवार एवं चोपड़ा परिवार को मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया। चोपड़ा परिवार से हीरालाल चोपड़ा एवं चोरड़िया परिवार से अशोक चोरड़िया ने परिषद एवं संस्कारकों के प्रति आभार व्यक्त किया।

### शिलान्यास कार्यक्रम

#### सरदारपुरा, जोधपुर

तेरापंथी सभा, सरदारपुरा के तत्वावधान में अमरनगर स्थित तेरापंथ भवन का विस्तार एवं लिफ्ट निर्माण का शिलान्यास संस्कारक मर्यादा कुमार कोठारी, कैलाश तातेड़, गौरव बरमेचा ने जैन संस्कार विधि से मंगल मंत्रोच्चार द्वारा संपादित करवाया।

तेरापंथी सभा के अध्यक्ष सुरेश जीरावला एवं सदस्यों द्वारा मंगलभावना यंत्र की विधिवत स्थापना की। इस अवसर पर उपस्थित सभी अतिथियों को संस्कारकों द्वारा त्याग-प्रत्याख्यान की विशेष प्रेरणा दी गई। कार्यक्रम में सरदारपुरा सभा तैयुप, महिला मंडल आदि की उपस्थिति रही।

उपस्थित जनमानस ने इस विधि की प्रशंसा की। सभी के मन में जैन संस्कार विधि को लेकर बहुत जिज्ञासा थी, जिनका संस्कारकों ने समाधान किया। तेरापंथ सभा मंत्री महावीर चोपड़ा द्वारा बधाई संदेश का वाचन व आभान ज्ञापित किया गया।

### नवीन कार्यालय कक्ष का उद्घाटन

#### साहूकारपेट, चेन्नई

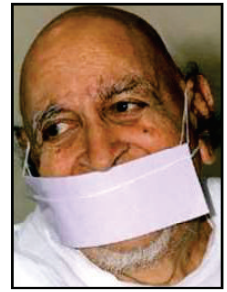
तेरापंथी सभा ट्रस्ट बोर्ड साहूकारपेट, चेन्नई के तत्वावधान में तेरापंथ भवन के नवनिर्मित एलिवेशन एवं नवीन कार्यालय नाहर चेंबर का जैन संस्कार विधि से उद्घाटन हुआ। बगड़ी निवासी, चेन्नई प्रवासी जयंतिलाल विजय सुराणा परिवार ने नवनिर्मित भवन एलिवेशन एवं दिवेर निवासी, चेन्नई प्रवासी तनसुखलाल, दिलीप नाहर परिवार ने नवीन कार्यालय कक्ष का उद्घाटन किया।

नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ जैन संस्कारक स्वरूपचंद्र दांती, मांगीलाल पितलिया, हनुमान सुखलेचा, रोशन बोथरा ने संपूर्ण मंगल मंत्रोच्चार, विधि-विधान के साथ शुभारंभ संस्कार संपादित किया। इस अवसर पर सभा-संस्थाओं के पदाधिकारीगण एवं अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।



## मनोनुशासनम्

:: आचार्य तुलसी ::



(क्रमशः)

- (घ) सोने से पहले और जागते ही—ये दो समय संकल्प के लिए अधिक फलप्रद होते हैं। सोते समय जो विचार किया जाता है, उसे सूक्ष्म (अवचेतन) मन शीघ्रता से ग्रहण करता है। इसलिए नींद में भी उसका कार्य चलता रहता है। हम जिन विचारों का संकल्प लेकर सोते हैं, उठते समय वे ही विचार मन में मिलते हैं। सोकर उठने के बाद इंद्रियाँ और मन शांत रहते हैं। उस समय का संस्कार मन पर दृढ़ व गहरा पड़ता है। इन दो समयों के अतिरिक्त जब भी समय मिले संकल्प को दोहराते रहना चाहिए, जिससे संकल्प-सिद्धि में सहयोग मिलता रहे और अन्य प्रकार के विचार भी न घुसने पाएँ।
- (च) संकल्प को दोहराते समय लयबद्धता होनी चाहिए। दोहराने का स्वर जितना लंबा होगा, उतनी ही स्थिरता बढ़ेगी। जितना कम समय होगा, उतनी ही स्थिरता कम होगी। भोजन के तत्काल बाद ऐसा नहीं करना चाहिए।
- (छ) संकल्प में सातत्य होना चाहिए। पाँच दिन संकल्प किया, फिर दो दिन छोड़ दिया, फिर सात दिन किया, फिर छोड़ दिया—यह साधना का क्रम नहीं है। साधना का अभ्यास प्रतिदिन करना चाहिए।
- (ज) संकल्प तालयुक्त श्वास के साथ करना चाहिए। जो संकल्प श्वास के साथ भीतर जाता है, वह तीन मिनट में शरीर के प्रत्येक अवयव पर अपना प्रभाव छोड़ जाता है। पूरक के समय वह संकल्प करना चाहिए कि संकल्प्य वस्तु भीतर जा रही है। कुंभक काल में यह संकल्प होना चाहिए कि संकल्प्य वस्तु समूचे शरीर में व्याप्त हो गई है। रेचनकाल में मन को खाली रखना चाहिए।
- संकल्प की पद्धति से जिस स्वभाव को बदलना चाहें, उसे बदलने में हम सफल हो सकते हैं। नए स्वभाव का निर्माण कर सकते हैं। अभ्यास से व्यक्ति अपनी शक्ति बढ़ा सकता है। अभ्यास न करने से जो शक्ति होती है, वह भी घट जाती है। आजकल लड़कियाँ पढ़ती हैं, कुछ वर्ष पहले नहीं पढ़ती थीं। क्या ज्ञानोपलब्धि की क्षमता पुरानी लड़कियों में नहीं थी? किंतु उचित सामग्री के अभाव में वह उपयोग में नहीं आ रही थी, अब आ रही है। उचित सामग्री के अभाव में विद्यमान शक्ति भी उसी तरह हो जाती है। संकल्प की साधना से जैसा चाहें, वैसा बन सकते हैं। मूल शक्ति व्यक्ति में ही होती है। वह हीन भावना की परतों के नीचे दबी रहती है। उसे पुरुषार्थ से जगाना अपेक्षित है। इसलिए साधना का महत्त्व है। नदियाँ अपने आपमें बहती थीं। पर बाँध बनाने से उनका उपयोग और बढ़ गया। आज उन्हीं से लाखों एकड़ भूमि की सिंचाई की जाती है। हम उपयोग करना जानें तो हमारे मन में भी अनंत शक्ति है।

### सातवाँ प्रकरण

- (१) तपः सत्त्व-सूत्र-एकत्व-बलभेदात् पंचधा भावना प्रतिमां जिनकल्पं वा प्रतिपद्यमानस्य ॥
- (२) तपसा क्षुधाजयः ॥
- (३) षण्मासं यावन्न बाधते क्षुधया ॥
- (४) सत्त्वभावनया भयं चिद्राज्य पराजयते ॥
- (५) उपाश्रय-तद्बहिः चतुष्क-शून्यगृह-श्मशानेष्ठिति स्थानभेदात् पंचधा ॥
- (६) रात्रौ सुप्तेषु सर्वसाधुषु भय-निद्राजयार्थमुपाश्रय एव कायोत्सर्गकरणं प्रथमा ॥
- (७) क्वचिदुपाश्रयाद् बहिस्तात् कायोत्सर्गकरणं द्वितीया ॥
- (८) चतुष्क-शून्यगृह-श्मशानेषु कायोत्सर्गकरणं पराः ॥
- (९) सूत्रभावनया कालज्ञानम् ॥
- (१०) सूत्रपरावर्तनानुसारेण उच्छ्वास-प्राणादयः सर्वे कालभेदा अवगताः स्युस्तथा सूत्रपरिचयः ॥
- (११) एकत्वभावनया देहोपकरणादिभ्यो भिन्नमात्मानं भावयन् भवति निरभिष्वङ्गः ॥
- (१२) बलभावनया परीषहाणां जयः ॥
- (१३) बलं शारीरं मानसञ्च ॥
- (१४) तत्र मानसं तथा परिवर्धितं यथा परीषहैरुपसर्गेश्च नोत्पद्येत् बाधा ॥
- (१५) यथाशक्ति चैताः परेषामपि ॥
- (१) प्रतिमा (कायोत्सर्ग की विशेष विधि) व जिनकल्प (साधना की उत्कृष्ट विधि) को स्वीकार करने वाले भिक्षु के लिए पाँच भावनाएँ होती हैं—(१) तप, (२) सत्त्व, (३) सूत्र, (४) एकत्व, (५) बल।
- वह इन भावनाओं से अपनी आत्मा को भावित करता है। ये पाँच तुलाएँ हैं, इनसे अपनी आत्मा को तोलता है। फिर प्रतिमा या जिनकल्प को स्वीकार करता है।
- (२) तप-भावना से भूख पर विजय पाने का अभ्यास किया जाता है।
- (३) वह परम योगी भूख को जीतते-जीतते ऐसा अभ्यास कर लेता है कि छह मास तक न खाने पर भी भूख से पीड़ित नहीं होता। उसका मन आर्त नहीं होता। शरीर में ग्लानि उत्पन्न नहीं होती।
- (४) सत्त्व भावना से भय और नींद पर विजय पाने का अभ्यास किया जाता है।
- (५) क्रमिक अभ्यास के लिए वह उपाश्रय, उसके बाहरी भाग, चतुष्क, शून्यगृह और श्मशान—इन पाँच स्थानों में कायोत्सर्ग करता है।

- (६) रात के समय सब साधुओं के सोने पर निद्रा और भय पर विजय पाने के लिए उठकर उपाश्रय में कायोत्सर्ग करना—यह पहली सत्त्व भावना है।
- (७) पहला अभ्यास परिपक्व होने पर उपाश्रय से बाहर कहीं एकांत में कायोत्सर्ग करना दूसरी सत्त्व भावना है।
- (८) अभ्यास का परिपाक होते-होते चौराहे, सूने घर व श्मशान में कायोत्सर्ग करना—क्रमशः तीसरी, चौथी और पाँचवीं सत्त्व भावना है।
- (९) सूत्र भावना से समय का ज्ञान होता है।
- (१०) सूत्र के परावर्तन (स्मरण) के अनुसार काल के सूक्ष्म भेदों का ज्ञान हो जाए, इस प्रकार सूत्रों को परिचित करने का अभ्यास किया जाता है। श्वास-प्रश्वास की मात्रा के साथ उनका उच्चारण होता है। एक मात्रा भी इतस्ततः नहीं होती।
- (११) एकत्व भावना के द्वारा देह और उपकरणों से अपनी आत्मा को भिन्न रूप में भावित कर निर्लेपता का अभ्यास किया जाता है।
- (१२) बलभावना से परिषहों (कष्टों) पर विजय प्राप्त की जाती है।
- (१३) बल दो प्रकार का होता है—(१) शारीरिक, (२) मानसिक।
- (१४) उनके द्वारा मनोबल इतना परिवर्धित किया जाता है, जिससे परीषहों व उपसर्गों के समुत्पन्न होने पर भी वह कभी विचलित नहीं होता।
- (१५) प्रतिमाधर व जिनकल्प मुनि इन भावनाओं से अपने-आपको पूर्णतः भावित करता है। किंतु यथाशक्ति दूसरे भिक्षुया गृहस्थ भी अपने आपको भावित कर सकते हैं।

### साधना की उच्च प्रक्रिया

भूख, पराक्रम-हीनता, अज्ञान, आसक्ति और दुर्बलता—ये पाँच साधना के बहुत बड़े विघ्न हैं। इन पर जितने अंश में विजय पाई जाती है, उतने ही अंश में साधना उद्दीप्त होती है। दीर्घकाल तक कायोत्सर्ग करने का इच्छुक साधन अथवा तीर्थंकर तुल्य साधना करने का इच्छुक साधन उन विघ्नों पर विजय पाने का प्रयत्न करता है। साधना के प्रथम चरण में भूख पर विजय पाने का अभ्यास किया जाता है। दूसरे चरण में भय और निद्रा पर विजय पाने का प्रयत्न किया जाता है। तीसरे चरण में प्राण की सूक्ष्मता के साथ शास्त्रीय ज्ञान का अभ्यास किया जाता है। चतुर्थ चरण में सब पदार्थों से भिन्नता की दृढ़ अनुभूति प्राप्त कर आसक्ति पर विजय पाने पर प्रयत्न किया जाता है। पाँचवें चरण में साधना में आने वाले कष्टों पर विजय पाने का प्रयत्न किया जाता है।

कंठकूप में वायु को धारण करने से भूख और प्यास पर विजय प्राप्त होती है। यह पाँचवें प्रकरण में बतलाया गया है। वहाँ भूख विजय की भावनात्मक प्रक्रिया का उल्लेख है। खाए बिना रहने का बार-बार अभ्यास तथा आहार न करते हुए भी तृप्ति और पुष्टि की सुदृढ़ भावना, अनुभूति या संकल्प करने से शरीर में कुछ रासायनिक परिवर्तन होते हैं और भूख की प्रखरता मंद हो जाती है। इस तपोभावना से साधक छह मास तक खाए बिना रह जाता है।

भय और नींद पर विजय पाने के लिए पाँच अभ्यासक्रम बतलाए गए हैं—रात्रि के समय उपाश्रय में कायोत्सर्ग करना। उसके सध जाने पर उपाश्रय के आस-पास बाहरी भाग में कायोत्सर्ग करना। वहाँ अभय प्राप्त हो जाने पर चौराहे में कायोत्सर्ग करना। फिर सूने घर में और श्मशान में। इस प्रकार क्रमिक अभ्यास से भय और नींद—दोनों पर विजय प्राप्त हो जाती है।

प्राण, मन और वाणी—तीनों में सामरस्य या सामंजस्य उत्पन्न करने पर चित्त की चंचलता या विषमता क्षीण हो जाती है। सूत्र भावना के द्वारा साधक इसी सामरस्य का अभ्यास करता है। उच्चारण और काल की मात्रा इतनी सध जानी चाहिए कि उच्चारण के द्वारा काल को और काल के द्वारा उच्चारण को मापा जा सके। कायोत्सर्ग या ध्यान में काल का ज्ञान उच्चारण और श्वास के द्वारा ही किया जाता है। एक श्वास-प्रश्वास में श्लोक के एक चरण का उच्चारण किया जाए तो एक मिनट में बारह चरण उच्चारित होते हैं। इसका अर्थ हुआ एक मिनट में बारह श्वास-प्रश्वास लिए जाते हैं। अभ्यास की परिपक्वता होने पर बारह चरणों के उच्चारण का अर्थ होता है—बारह श्वास-प्रश्वास और बारह श्वास-प्रश्वासों का अर्थ होता है—एक मिनट। इस प्रकार उच्चारण, श्वास-प्रश्वास और समय—तीनों की दूरी समाप्त होकर वे एकरूप हो जाते हैं। इस प्रक्रिया में चिरकाल के बाद श्वास की गति मंद हो जाती है। एक मिनट में आने वाले सोलह-सत्रह श्वास घटकर पाँच-सात रह जाते हैं। जिस प्रकार श्वास की गति मंद होगी, उसी अनुपात से उच्चारण की संख्या भी कम हो जाएगी। इस साधना की अंतिम परिणति प्राणलब्धि के रूप में बदल जाती है। प्राण-लब्धि-संपन्न साधक मानस-चक्षु से असीम ज्ञान का साक्षात् कर लेता है।

(क्रमशः)





## संबोधि

:: आचार्य महाप्रज्ञ ::

### बंध-मोक्षवाद

मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

भगवान् प्राह

(३२) यन्मतं सर्वसाधूनां, तन्मतं शल्यकर्तनम्।  
साधयित्वा च तत्तीर्णा, निःशल्यता व्रतिनां वराः।।

जो मत-साधना-मार्ग सभी निर्ग्रथों द्वारा अभिमत है वह मार्ग-निर्ग्रथ प्रवचन शल्य को काटने वाला है। उसकी साधना कर बहुत से उत्तमव्रती निःशल्य बनकर भव-समुद्र को तर गए।

शल्य आंतरिक व्रण है। ऊपर की चिकित्सा साध्य है, अंतर की असाध्य है, क्योंकि वह दृश्य नहीं है। शल्य भीतर ही भीतर पलने वाला महान् दुःखदायी और विनाशक व्रण है। यह सूक्ष्म है। इसे पकड़ने के लिए पैनी दृष्टि चाहिए। गहन अंतर्दर्शन के बिना इसके पकड़ पाना कठिन है। साध्य की प्राप्ति में यह बड़ा अमंगलकारी है। साधक को पहले ही क्षण में इससे मुक्त होकर साधना में प्रवेश करना चाहिए। शल्य तीन हैं—

(१) मायाशल्य—माया का अर्थ है—वक्रता, भ्रंति। वक्र आदमी ही घूमता है, सीधा-सरल नहीं। भ्रंति भी वक्रता में पलती है। सरल व्यक्ति के लिए स्वीकृति और साधना दोनों सरल हैं। उसकी परिणति भी सरल है, किंतु वक्र के लिए कठिन है।

(२) निदानशल्य—इसका अर्थ है—वैषयिक वासना का संकल्प। शरीर और इंद्रिय-विषयों के आकर्षण को यदि साधक नहीं छोड़ पाता तो पग-पग पर उसके जीवन में संघर्ष खड़े हो जाते हैं। इंद्रियों के लुभावने विषय उसे अपनी ओर खींच लेते हैं। वह जिसके लिए साधना में आया था, उसे भूल जाता है, और विषयों के चंगुल में फँस जाता है। ऐहिक विषयों की पूर्ति असंभव होती है तो भविष्य के सुखों के लिए भीतर ही भीतर अकेले में संरचना कर लेता है और अपने वर्तमान या सुखद साधना-पथ से च्युत होकर नरक में स्वयं को डाल देता है। ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती ने पूर्वभव में इसी प्रकार की संरचना से जीवन को दुःखद बना लिया। चित्तमुनि ने जब उसे आर्य-पथ पर चलने की प्रेरणा दी, तब चक्रवर्ती ने कहा—‘मैं जानता हूँ धर्म को, किंतु कर नहीं सकता। और अधर्म को भी जानता हूँ किंतु छोड़ नहीं सकता। यह मेरे अशुभ तीव्रतम संकल्प का परिणाम है।’

(३) मिथ्यादर्शनशल्य—बुद्ध ने कहा—‘भिक्षुओ! मिथ्यादृष्टि से समान दोषपूर्ण दूसरा धर्म नहीं देखता। अनिष्टकारी सभी धर्मों में मिथ्यादृष्टि सबसे बुरा धर्म है।’ बुद्ध के अष्टांगिक मार्ग में सम्यग्दृष्टि प्रथम है और महावीर के धर्म-दर्शन में भी सम्यग्दर्शन प्रथम है। यह अध्यात्म की रीढ़ है। दृष्टि की मलिनता हटने पर ही यथार्थ का अवबोध होता है। सत्यासत्य का अवबोध सम्यग्दर्शन है। आगे के पथ की सुगमता इसी विवेक पर निर्भर है।

(३३) पण्डितो वीर्यमासाद्य, निर्घाताय प्रवर्तकम्।  
धुनीयात् सञ्चितं कर्म, नवं कर्म न वा सृजेत्।।

पण्डित व्यक्ति कर्म-क्षय के लिए प्रवर्तक वीर्य को प्राप्त कर पूर्वकृत कर्म की निर्जरा करता है और नए कर्म का अर्जन नहीं करता।

(क्रमशः)

## अवबोध

:: मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनू' ::

कर्म बोध

अवस्था व समवाय

प्रश्न ६ : उद्वर्तन किसे कहते हैं?

उत्तर : स्थिति बंध व अनुभाग बंध के बढ़ने को उद्वर्तन कहते हैं।

प्रश्न ७ : अपवर्तन किसे कहते हैं?

उत्तर : स्थिति बंध व अनुभाग बंध के घटने को अपवर्तन कहते हैं। उद्वर्तन व अपवर्तन के कारण कोई कर्म दीर्घावधि के बाद फल देता है, कोई शीघ्र फल देता है। किसी कर्म के फल देने की शक्ति तीव्र हो जाती है, किसी की मंद।

प्रश्न ८ : सत्ता किसे कहते हैं?

उत्तर : बंध के बाद जब तक कर्म वर्गणा आत्मा के साथ अनुबंधित रहती है, उसे सत्ता कहते हैं।

(क्रमशः)

## उपासना



(भाग - एक)

:: आचार्य महाश्रमण ::

### जैन जीवनशैली

साधार्मिक वात्सल्य

जैन जीवनशैली का नौवाँ सूत्र है—साधार्मिक वात्सल्य। अपने समान धर्म वाले व्यक्ति के प्रति वात्सल्य हो, बंधुत्व की भावना हो। कहा गया—‘जो णमुक्कारधारओ, सो मे परम बंधवो।’ जो नमस्कार महामंत्र का जप करने वाला है, वह मेरा परम बंधु है। इसका यह तात्पर्य नहीं है कि दूसरा कोई हमारा बंधु नहीं है। किंतु समानधर्मी व्यक्ति के लिए जो भावना होती है, उसे आगे बढ़ाने के लिए जो एक लक्ष्य बनाता है, वह बहुत काम का है। दूसरे के प्रति अवज्ञा और उपेक्षा की बात नहीं है, किंतु समानधर्मिता की जो स्फुरणा है, उसके प्रति वत्सलता का भाव, उसे आगे बढ़ाने का भाव, उसे सहारा देने का भाव, धर्म में स्थिरीकरण में सहयोग, उसके साथ आत्मीयता की एक अनुभूति—आदि-आदि बातें साधार्मिक वात्सल्य के अंतर्गत आती हैं। पूज्य गुरुदेव ने कर्मणा जैन बनाने की प्रेरणा दी। उसके मूल में यह साधार्मिक वात्सल्य की ही भावना निहित है। कर्म से भी जो जैन है, वह भी मेरा अपना भाई है। इस तरह एक बहुत व्यापक दायरा बनता है साधार्मिक वात्सल्य का। हम इस सूत्र पर भी विचार करें—किस प्रकार हमारी साधार्मिकता पुष्ट हो सकती है? हम कैसे एक-दूसरे के सहयोगी और सहारे बन सकते हैं?

जैन जीवनशैली के ये नौ सूत्र हैं। मैं मानता हूँ—जैन शब्द को इसमें से निकाल दें तो ये जीवनशैली के सूत्र बन जाते हैं। इसके साथ जैन शब्द इसलिए रखा गया है कि जैन धर्म ने जीवनशैली के कुछ महत्वपूर्ण सूत्र हमें सुझाए हैं। जैन शब्द इसीलिए उनका वाचक बनता है अन्यथा ये नौ सूत्र जीवनशैली के सूत्र हैं, जो सभी के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। हमें इन सूत्रों पर चिंतन, मनन और अनुशीलन करना है, उन्हें जीवन-व्यवहार में उतारना है। जो व्यक्ति इनके आधार पर अपनी जीवनशैली निर्मित करेगा, वह स्वयं सुखी और स्वस्थ जीवन जीएगा, परिवार समाज के लिए भी सुख का मार्ग प्रशस्त करेगा।

तेरापंथ

वि०सं० १८१७ (ई० सन् १७६०, २६ जून, शनिवार) आषाढ शुक्ला पूर्णिमा का दिन। मेवाड़ में उदयपुर जिले का गाँव केलवा। तीर्थंकर चंद्रप्रभ का मंदिर। मंदिर के एक ओर बनी अंधेरी ओरी। दिन भर तपने के बाद ढलता हुआ सूरज। सात बजकर पचीस मिनट का समय। पाँच जैन मुनियों ने बद्धांजलि हो अर्हंतों और सिद्धों को वंदन किया। प्रसन्न वातावरण में उन्होंने भावदीक्षा स्वीकार की। इसी दिन दो अन्य स्थानों में भी आठ मुनियों ने भावदीक्षा को स्वीकार किया। तेरह साधुओं द्वारा स्वीकृत दीक्षा का यह उपक्रम ही तेरापंथ की स्थापना का उपक्रम है। यही दिन तेरापंथ का स्थापना दिवस है। उन तेरह साधुओं में सबसे प्रमुख थे—संत भीखणजी। आज हम उन्हें आचार्य भिक्षु के नाम से पहचानते हैं।

आचार्य भिक्षु ने सं० १८१७ चैत्र शुक्ला नवमी को स्थानकवासी संप्रदाय से अभिनिष्क्रमण किया। वहाँ से जोधपुर गए। वहाँ के कुछ श्रावक समझे। जोधपुर से उन्होंने बिलाड़ा की ओर विहार कर दिया। इधर जोधपुर में एक दिन तेरह श्रावक बाजार की एक दुकान में सामायिक-पौषध आदि कर रहे थे। उस समय दीवान फतेहमलजी सिंधी उधर से आए। बाजार में श्रावकों को सामायिक आदि करते देख उनको आश्चर्य हुआ। उन्होंने स्थिति की जानकारी करनी चाही कि श्रावक यहाँ क्या कर रहे हैं? श्रावकों ने आचार्य भिक्षु की धर्मक्रांति की बात बताई। दीवानजी ने पूछा—इस धर्मक्रांति में कितने व्यक्ति सम्मिलित हैं? श्रावकों ने बताया हम यहाँ तेरह श्रावक हैं और तेरह ही साधु हैं। वहाँ पास ही एक सेवक जाति का कवि खड़ा था। साधु और श्रावकों की संख्या की बात सुन उसने तत्काल एक दोहा जोड़ दिया—

साध-साध रो गिलो करै, ते तो आप आपरो मंत।  
सुणज्यो रे शहर रा लोकां!, ए तेरापंथी तंत।।

(क्रमशः)





## बारह व्रत कार्यशालाओं के विविध आयोजन



### विजयनगर, बेंगलुरु

तेरापंथ भवन में मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में त्रिदिवसीय 'बारह व्रत स्वीकरण कार्यशाला' का तेयुप विजयनगर, बेंगलुरु द्वारा शुभारंभ हुआ।

मुनि दीप कुमार जी ने कहा कि बारह व्रत अहिंसक समाज की संरचना का विस्तृत प्रारूप है। इसे शोषण मुक्त स्वस्थ समाज रचना की आचार संहिता भी कहा जा सकता है। गृहस्थ के लिए संपूर्ण हिंसा का परिहार संभव नहीं है। उसके अनावश्यक हिंसा को छोड़ना ही अहिंसक समाज की संरचना में योगभूत बनना है। जीवन को प्रायोगिक बनाने की एक प्रक्रिया है—प्रत्याख्यान। इस विषय में भगवान महावीर ने श्रावक के लिए बारह व्रतों की व्यवस्था दी। प्रत्याख्यान के द्वारा जीवन को कैसे बदला जा सकता है? इसका निदर्शन है। भगवान महावीर के बारह व्रतधारी श्रावक हैं।

मुनिश्री ने आगे कहा कि दो शब्द हैं—श्रावक और अनुयायी। सामान्यतः इन्हें एकार्थक माना जाता है, पर इसमें बड़ा अंतर है। अनुयायी का अर्थ होता है—पीछे चलने वाला और श्रावक का अर्थ है—व्रत ग्रहण करने वाला। मुनिश्री ने विस्तार से अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य अणुव्रत के बारे में समझाया।

मुनि काव्य कुमार जी ने सम्यक्त्व के लक्षणों की चर्चा की। तेयुप के अध्यक्ष राकेश पोखरणा ने बारह व्रत कार्यशाला की जानकारी देते हुए व्रत दीक्षा पुस्तिका के बारे में बताया।

### पीतमपुरा दिल्ली

खिलौनी देवी धर्मशाला पीतमपुरा में अभातेयुप द्वारा निर्देशित एवं तेयुप, दिल्ली द्वारा आयोजित बारह व्रत स्वीकरण कार्यशाला का शुभारंभ तेयुप के सदस्यों ने विजयगीत से किया। शासनश्री साध्वीश्री रतनश्रीजी ने कहा- 'भगवान महावीर ने दो प्रकार के धर्म की प्ररूपणा की है- आगार धर्म एवं अनगार धर्म। अनगार धर्म की साधना प्रत्येक व्यक्ति नहीं कर सकता पर आगार धर्म की साधना अति सरल है। उसमें अपनी इच्छानुसार अपवाद रखते हुए व्रतों को स्वीकार कर सकते हैं। व्रत का अर्थ है- संवरण, आवरण अथवा जीवन सुरक्षा कवच। हमारे आगमों में 90 श्रावकों का वर्णन आता है, उनके पास करोड़ों की

संपत्ति थी पर व्यक्तिगत जीवन के लिए भोग-उपभोग में आने वाली वस्तुओं का सीमाकरण किया।' अन्त में साध्वीश्रीजी ने प्रथम श्रावक आनंद का इतिवृत्त प्रस्तुत किया।

शासनश्री साध्वीश्री सुव्रतांजी ने 'भोगोपभोग विरति' की व्याख्या करते हुए कहा- 'भोग का अर्थ है एक बार काम में आने वाली, उपभोग का अर्थ बार-बार काम आने वाली। इन दोनों चीजों की सीमा करें। खाद्य वस्तुओं, परिधान, पानी, बिजली आदि का परिसीमन करें, जिससे व्रतों में निखार आएगा। जीवन सुखी व शांत बनेगा। अहिंसा की साधना का विकास होगा।' शासनश्री सुमनप्रभाजी ने कहा- 'इच्छा परिमाण का अर्थ है- आकांक्षाओं को विस्तार न दें। आकांक्षाएं आकाश के समान अनंत हैं। उनकी पूर्णता के लिए जीवनभर भाग-दौड़ करते रहें, उनका अंत आने वाला नहीं है।' तेरापंथी महासभा के उपाध्यक्ष संजय खटेड़ एवं वरिष्ठ कार्यकर्ता अशोक संचेती ने अपनी भावनाएं अभिव्यक्त की। युवक परिषद् सदस्य विशाल पगारिया ने धन्यवाद एवं आभार ज्ञापन किया। तेयुप दिल्ली के पूर्व मंत्री सौरभ आंचलिया ने कार्यक्रम का संयोजन किया।

### फरीदाबाद

तेरापंथ युवक परिषद, फरीदाबाद द्वारा बारह व्रत कार्यशाला का आयोजन किया गया। नमस्कार महामंत्र एवं मंगलाचरण बहादुर सिंह दूगड, भरत वेगवानी एवं विनीत बैद ने आचार्यश्री तुलसी द्वारा रचित 'श्रावक व्रत धारो' द्वारा गीत के साथ किया। उपासिका बहने प्रवक्ता उपसिका मंजु लुनिया, सुशीला दुगड और सुनीता नाहटा ने श्रावक समाज को बारह व्रत के विषय में विस्तार से समझाया। उन्होंने बताया कि श्रावक अपने जीवन में सब प्रकार की पापकारी प्रवृत्तियों का त्याग नहीं कर सकता फिर भी उनकी सीमा का निर्धारण कर सकता है। पाप सहित प्रवृत्ति की सीमा का निर्धारण भी आध्यात्मिक विकास का एक द्वार है। कार्यशाला प्रशिक्षिकाओ ने सभी को बारहव्रती बनने की प्रेरणा दी।

तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष गौतम गोलछा ने श्रावक समाज को ज्यादा से ज्यादा संकल्प पत्र अथवा ऑनलाइन के द्वारा फॉर्म भरने का अनुरोध किया। अभातेयुप सदस्य एवं कार्यशाला संयोजक राजेश जैन ने सभी उपस्थित श्रावकों को बारह व्रत को समझ कर उन्हें ग्रहण करने

की प्रेरणा दी। कार्यशाला के पश्चात जिज्ञासा-समाधान और अनुभव साझा करने में भी श्रावक समाज ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। इस कार्यशाला में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, तेरापंथ युवक परिषद, तेरापंथ महिला मंडल, अणुव्रत समिति एवं तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के सदस्यों की सहभागिता रही। मंच संचालन तेयुप मंत्री राघव बाफना ने किया। उपाध्यक्ष सुनील बैद ने आभार ज्ञापन किया।

### अमराईवाड़ी-ओढ़व

तेरापंथ युवक परिषद, अमराईवाड़ी-ओढ़व द्वारा बारह व्रत कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन अमराईवाड़ी में किया गया। सामूहिक नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत की गई। तेयुप मंत्री सुनील चिपड़ ने स्वागत वक्तव्य दिया। उपासिका संगीता सिंघवी ने बारह व्रत के नियमों का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत किया एवं बहुत ही सुंदर एवं सरल भाषा में बारहव्रत के बारे में विस्तृत जानकारी दी। आभार ज्ञापन कार्यक्रम संयोजक विमल मेहता ने किया।

### तिरुपुर

तेरापंथ युवक परिषद, तिरुपुर द्वारा साध्वी गवेषणाश्रीजी सान्निध्य में बारह व्रत स्वीकरण कार्यशाला का आयोजन किया गया। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा, कोषाध्यक्ष भरत मरलेचा, युवा वाहिनी सहप्रभारी सोनू डागा, अभातेयुप साथी चेतन बरड़िया कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री द्वारा नमस्कार मंत्र के समुच्चारण के साथ हुई। तेरापंथ युवक परिषद के सदस्यों ने मंगलाचरण की प्रस्तुति दी। साध्वी गवेषणाश्रीजी ने मंगल उद्बोधन देते हुए कहा कि बारह व्रत के संकल्पों को स्वीकार करने से श्रावक अपनी आत्मा को कल्याण की ओर अग्रसर कर सकता है। बारह व्रत का मूल आधार है कि हम अनावश्यक हिंसा से बचें। अपने भीतर अहिंसा की चेतना को जागृत करें। साथ ही साध्वीश्री ने श्रावक समाज को संयमित जीवन जीने के सूत्र बताये। साध्वीवृंद द्वारा सुंदर गीतिका के माध्यम से बारह व्रत पर प्रकाश डाला गया। राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज ने कहा कि श्रावक को अपने जीवन में व्रत को स्वीकार करना चाहिए एवं जीवन में संयम को अपनाना चाहिये।

इस अवसर पर तेरापंथ युवक परिषद, तिरुपुर द्वारा राष्ट्रीय अध्यक्ष की उपस्थिति में तेरापंथ किशोर मंडल का गठन किया गया। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने तेरापंथ किशोर मंडल के संयोजक के रूप में आयुष तातेड़ और सहसंयोजक के रूप में हितेश भादानी के नाम की घोषणा की। जैन संस्कार विधि से संपादित होने वाले कार्यक्रमों के बैनर का अनावरण राष्ट्रीय अध्यक्ष, कोषाध्यक्ष आदि द्वारा किया गया। राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय ने जैन संस्कार विधि को घर-घर पहुंचाने का आह्वान किया। कार्यशाला संयोजक मोहित श्यामसुखा ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन चेतन बरड़िया ने किया।

### बेंगलुरु

तेरापंथ युवक परिषद, बेंगलुरु द्वारा मुनि हिमांशुकुमारजी के सान्निध्य में बारह व्रत स्वीकरण कार्यशाला का शुभारंभ किया गया। मुनिश्री ने अनगार धर्म एवं आगार धर्म की व्याख्या करते हुए व्रत के महत्व को समझाया। मुनिश्री ने कहा कि बारह व्रत धारण करने वाला श्रावक निकाचित कर्मों का बंध करने से बच सकता है एवं बारह व्रतों की उत्कृष्ट आराधना करने से श्रावक एकाभवतारी भी बन सकता है।

मुनि हेमंतकुमारजी ने भी कार्यशाला के संदर्भ में जानकारी देते हुए प्रेरणा प्रदान की। तेयुप अध्यक्ष रजत बैद एवं उपाध्यक्ष विवेक मरोठी ने कार्यशाला के लक्की ड्रा विजेता को पारितोषिक भेंट किया। मंत्री रोहित कोठारी ने कार्यशाला के बारे में जानकारी प्रस्तुत की। संयोजक रमेश सालेचा, सहमंत्री संदीप चौपड़ा, मनोज पोकरणा, कार्यसमिति सदस्य रंजीत कटारिया, ऋषभ सेठिया, मोहित सुराणा ने संभागियों को कार्यशाला की किट भेंट की। कार्यशाला में परिषद् के साथियों के साथ श्रावक-श्राविका समाज की अच्छी उपस्थिति रही।

### गंगाशहर

तेरापंथ युवक परिषद, गंगाशहर द्वारा शासनश्री साध्वी शशिरेखाजी व साध्वी ललितकलाजी के सान्निध्य में बारह व्रत कार्यशाला का आयोजन शान्ति निकेतन में किया गया। साध्वीश्री ने श्रावक समाज को बारह व्रत के विषय में विस्तार से समझाया। उन्होंने बताया कि व्रत वह सुरक्षा कवच है, जो व्यक्ति को बुराइयों से बचाता है।

भगवान महावीर ने श्रावक के लिए बारह व्रतों का विधान किया है और उसे आगार धर्म कहा है। गृहस्थ भी बारह व्रतों के माध्यम से धर्म की आराधना कर सकता है और सुगति (देवगति) का अधिकारी बन सकता है। एक गृहस्थ पूरी तरह संयमी जीवन नहीं जी सकता पर असंयम की सीमा तो कर सकता है एवं व्रतों को स्वीकार कर बारह व्रती बनकर आत्मोत्थान की दिशा में कदम बढ़ा सकता है।

परिषद् अध्यक्ष ने बताया कि अभातेयुप के निर्देशन में शाखा परिषदें बारह व्रत कार्यशाला के माध्यम से श्रावक-श्राविकाओं में व्रतों की चेतना जगाते हुए आध्यात्मिक विकास की ओर अग्रसर करने का कार्य करती हैं। तेयुप मंत्री भरत गोलछा ने इस कार्यशाला एवं संभागीयों के बारे में जानकारी दी। परिषद् के मीडिया प्रभारी धनपत भंसाली ने कहा कि श्रावक समाज में आध्यात्मिक उत्थान एवं विकास हेतु तेयुप समय समय पर ऐसे कार्यक्रम करती रहती हैं।

### आमेट

तेरापंथ युवक परिषद, आमेट द्वारा साध्वी कीर्तिलताजी के पावन सान्निध्य में बारह व्रत स्वीकरण कार्यशाला आयोजित हुई। साध्वी कीर्तिलताजी ने व्रत की मीमांसा करते हुए कहा- 'भारतीय संस्कृति व्रत व संयम की संस्कृति है। व्रत के बिना कर्मों का द्वार कभी बन्द नहीं हो सकता।

भगवान महावीर ने फरमाया कि आप अपने जीवन में हर चीज की सीमा जरूर करें। जब तक सीमा नहीं करोगे, त्याग नहीं करोगे तो कर्मों का नाला चलता रहेगा। अच्छी जिंदगी जीने के लिए जरूरी है सीमा करना।

जब तक त्याग नहीं किया तब तक आसक्ति का द्वार बन्द नहीं हो सकता। रहने के लिए अच्छा घर मिल जाए, खाने के लिए अच्छा भोजन मिल जाए फिर इतनी आसक्ति क्यों? व्रत हमेशा हिंसा, झूठ, अब्रह्मचर्य आदि से बचाता है। जैनत्व की पहचान आज धूमिल होती जा रही है। खान-पान, रहन-सहन सब कुछ में शीर्षासन हो रहा है। पाश्चात्य संस्कृति हावी हो रही है।

अपनी संस्कृति को सुरक्षित रखने के लिए फिर से सिंहावलोकन करना होगा। त्याग की संस्कृति को जीवन में अपनाना होगा। ऐसा होगा तभी हम सत्यम, शिवम्, सुन्दरम को प्राप्त कर सकेंगे।'





## नवकार करे : भव पार

साउथ कोलकाता

जैनधर्म का सुप्रसिद्ध महामंत्र है- नमस्कार महामंत्र। नमस्कार महामंत्र चैतन्य जागरण और चित्त की निर्मलता को विकसित करने वाला अलौकिक मंत्र है। यह बोधि, समाधि और सिद्धि दाता है। यह सब पापों को नाश करने वाला महामंत्र है। हिन्दु धर्म में गायत्री मंत्र, बौद्ध धर्म में त्रिशरण मंत्र व जैन धर्म में नमस्कार महामंत्र विश्रुत है। चौदह पूर्वों के सार स्वरूप इस मंत्र को जैन धर्म में महामंत्र माना गया है। महानिशीथ में इसको महाश्रुत स्कन्ध कहा गया है। जिन भद्रगणी क्षमा श्रमण ने इस महामंत्र को सर्व श्रुतान्तर्गत बतलाया है। इस मंत्र को दिगम्बर, श्वेताम्बर, परम्पराओं ने समान रूप से माना है। इसकी महिमा अचिन्त्य एवं अकथनीय है। प्रवाह की दृष्टि से यह मंत्र अनादि है। वर्तमान में तीर्थंकर भगवान इसकी रचना करते हैं। एक परम्परा के अनुसार इस मंत्र की रचना गणधर करते हैं। यह मंत्र भरपूर ऊर्जा से भरा हुआ है। इस मंत्र के कोई व्यक्ति विशेष अधिष्ठाता नहीं होते हैं। इस मंत्र में व्यक्ति विशेष की नहीं गुणों की पूजा होती है। यह जैनों का सर्वमान्य, महाप्रभावक, कल्याणक, उन्नायक, विघ्नविनाशक संकटमोचक मंत्र है। उपरोक्त विचार मुनि जिनेशकुमारजी ने 'नवकार करे : भव पार' विषय पर तेरापंथ भवन में व्यक्त किए। मुनि परमानंदजी ने कहा कि नवकार मंत्र एक सहारा है। नवकार मंत्र से व्यक्ति भव से मुक्त हो जाता है। मुनि कुणालकुमारजी ने गीत का संगान किया। इस अवसर पर उषा धाड़ेवा ने विचार रखे। तेरापंथ भवन में 93 घंटे का नमस्कार महामंत्र जप हुआ।

## माईड फुलनेस सेमिनार का आयोजन

### दक्षिण दिल्ली, ग्रीनपार्क

साध्वी कुन्दनरेखाजी के पावन सान्निध्य में माईड फुलनेस सेमिनार का भव्य आयोजन हुआ। 'योगा से ही होगा' विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए साध्वी कुन्दनरेखाजी ने कहा- 'योग चित्त शुद्धि का उपाय है! मन-वचन-काय की स्थिरता का आधार है। आधि-व्याधि और उपाधि का निवारक एवं समाधिदायक है! प्रेक्षाध्यान के द्वारा तनाव मुक्ति एवं अन्तःशक्ति को उद्घाटित किया जा सकता है। इस योग शब्द में अनेकों प्रयोगों का समाहार होता है। श्वास प्रेक्षा, कायोत्सर्ग, प्राणायाम और यौगिक क्रियाओं के साथ चैतन्य केन्द्रों अर्थात् ऊर्जा केन्द्रों को एक्टिव किया जा सकता है। मुद्राओं और ध्वनियों के द्वारा भी चक्रास एक्टिव होते हैं। वर्तमान

## साहूकारपेट, चेन्नई

साध्वी लावण्यश्रीजी के सान्निध्य में सुशीला देवी चोरड़िया ने दूसरे मासखमण का प्रत्याख्यान किया। साध्वीश्री ने तप के महत्व को बताते हुए कहा- 'तप के क्षेत्र में शूरवीर ही कदम बढ़ाते हैं। जो हिम्मत से, साहस से, मनोबल से, धृतिबल से, आत्मबल से अपने आपको तोलते हैं, वे वीर व्यक्ति तप के रण में बाजी जीत जाते हैं। सुशीला चोरड़िया ने अपने आपको तोला और मासखमण कर लिया।'

तपस्विनी बहिन के तप की अनुमोदना में साध्वी सिद्धान्तश्रीजी एवं साध्वी दर्शितप्रभाजी ने गीत की प्रस्तुति दी। श्रीकान्त चोरड़िया एवं चोरड़िया परिवार की बहन-बेटियों ने भावों की प्रस्तुति दी। तेरापंथ सभाध्यक्ष उगमराज सांड, हिमानी आच्छा, रीमा सिंघवी, किरण मेहता, तेयुप अध्यक्ष दिलीप गेलडा ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। साध्वी प्रमुखाश्रीजी के संदेश का वाचन देवीलाल हिरण ने किया। साध्वीश्री के सान्निध्य में 3 व्यक्तियों ने एकासन मासखमण का भी प्रत्याख्यान किया। तप से तप का अनुमोदन में भाई-बहनों ने पंचोला, चोला, तेला एवं एकासन मासखमण के संकल्प ग्रहण किये। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी दर्शितप्रभाजी ने किया।

## विजयनगर, बेंगलोर

मुनि दीपकुमारजी के सान्निध्य में अर्हम भवन में अनीशा बाबेल धर्मपत्नी राकेश बाबेल के 30 दिन के मासखमण तप का अनुमोदन समारोह श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, विजयनगर के

युग समस्या बहुल युग है। समस्याओं का निवारण बाहर में खोजा जा रहा है, लेकिन समाधान भीतर है, इसलिए आज की कार्यशाला का आगाज़ है- 'योगा से ही होगा।' साध्वी सौभाग्यश्रीजी ने 'योगा से ही होगा' कार्यशाला का एक सक्षम एवं पहला प्रभावी प्रयोग कायोत्सर्ग में अघोयात्रा, मध्य यात्रा और उर्ध्वयात्रा के द्वारा जन चेतना को झेंत कर दिया। इस अवसर पर एक गीत का संगान कर समा बांध दिया। साध्वी कल्याणश्रीजी ने मुद्राओं की जानकारी देने से पूर्व आकाश, अग्नि, वायु, पृथ्वी और जल पाँच तत्वों की जानकारी दी तथा इनसे होने वाली विभिन्न प्रकार की प्रकार की मुद्राओं को प्रेक्टिकल करा कर, उनसे होने वाले लाभ पर भी

तत्वावधान में आयोजित किया गया। इस अवसर पर उद्बोधन प्रदान करते हुए मुनि दीप- कुमारजी ने कहा कि प्रबल मनोबली ही मासखमण जैसी तपस्या कर सकते हैं। अनीशा बाई ने मासखमण तप कर मनोबल का परिचय दिया है। तप मंगल है, क्योंकि तप शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा चारों को मंगलमय बनाता है। तप जैन शासन की प्रभावना का हेतु है। आज के युग में इतनी बड़ी तपस्या चमत्कार से कम नहीं है। अनीशा बाई ने अपने पुत्र मुनि काव्यकुमार को संघ को समर्पित किया है। यह संघ को बहुत बड़ी भेंट की है। अब पुत्र मुनि के चातुर्मास में हमें यह मासखमण तप की अच्छी भेंट की है। गुरुदेव महाश्रमणजी की कृपा से यह तपस्या हुई है। उनके शासनकाल में धर्मसंघ में चारों और तप की ज्योति प्रज्वलित हो रही है। मुनिश्री ने तपस्विनी बहिन के लिए स्वरचित गीत का संगान किया। संसारपक्षीय मां के मासखमण पर भाव व्यक्त करते हुए मुनि काव्यकुमारजी ने कहा कि तपस्या से हमारी आत्मा की शुद्धि होती है। मेरी संसारपक्षीय मां ने यह मासखमण तप कर संकल्पबल की मजबूती का उदाहरण प्रस्तुत किया है। मेरी दीक्षा में भी मेरी संसारपक्षीय मां अनीशा बाबेल प्रेरिका रही है।

कार्यक्रम में तेरापंथ सभा विजयनगर अध्यक्ष प्रकाश गांधी ने तपस्वी बहन के तप की अनुमोदना करते हुए अपने विचार व्यक्त किए। सभा मंत्री मंगल कोचर ने साध्वी प्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी के संदेश का वाचन किया। सभा के सदस्यों ने तप अभिनंदन गीत का संगान किया। बाबेल परिवार की तरफ से चिरायु बाबेल, अक्षरा बाबेल, नेहा चोरड़िया ने वक्तव्य दिया एवं

प्रकाश डाला। साध्वी कुन्दनरेखाजी ने ध्वनित्रं के अन्तर्गत बीजमंत्रों को रोग निवारक एवं समाधि दिलाने वाले बताते हुए उसके साथ श्वासप्रेक्षा, यौगिक क्रियाओं द्वारा भी सदन को नया संदेश दिया।

प्रेक्षागीत से कार्यक्रम का प्रारंभ तेरापंथ महिला मण्डल दक्षिण दिल्ली द्वारा किया गया। दक्षिण दिल्ली युवती बहिनों द्वारा गीत का संगान किया गया। दक्षिण दिल्ली अध्यक्ष हीरालाल गेलडा ने सबका स्वागत और आभार प्रदर्शन किया। कार्यक्रम में गोबिंद बाफना, सागर बेंगानी सहित सभा के पदाधिकारीगण, महिला मंडल, तेयुप, ज्ञानशाला सभी का सहयोग रहा। भाई-बहिनों की उपस्थिति बहुत ही सराहनीय रही।

बाबेल परिवार ने गीत का संगान किया। तपसण की बहन मनीषा जैन ने भावपूर्ण विचार रखे। तेयुप अध्यक्ष राकेश पोखरना, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष मंजू गादिया, अर्हम मित्र मंडल मंत्री विनोद पारख, ज्ञानशाला संयोजिका मनीषा घोषल ने भी अपने विचार रखे। तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ कन्या मंडल एवं ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं ने अलग-अलग गीत का संगान किया। तेरापंथ सभा एवं सभी सहयोगी संस्थाओं के पदाधिकारीगण ने तपस्वी बहन का साहित्य एवं मोमेंटो द्वारा तप अभिनंदन किया। संचालन निधि चावत ने किया। कार्यक्रम में विजयनगर एवं आसपास के क्षेत्र से श्रावक-श्राविका समाज की अच्छी उपस्थिति रही।

## सीटीलाइट, सूरत

साध्वी त्रिशलाकुमारीजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा द्वारा मासखमण के दो तपस्वियों का अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित किया गया। चंद्रकांत बदामिया और प्रीति सामरा ने 27 की तपस्या के साथ मासखमण की तपस्या परिसम्पन्न की।

तप अभिनंदन कार्यक्रम में साध्वी त्रिशलाकुमारीजी ने श्रावक समाज को संबोधित करते हुए फरमाया कि खाने का संयम करना अपने आप में बहुत बड़ी बात है। तपस्या के द्वारा निर्जरा होती है। विरल व्यक्ति ही हो सकते हैं, जो इतनी लम्बी तपस्या कर सकते हैं। मोक्ष मार्ग के चार द्वार बताए गए हैं, उनमें एक है तप। तपस्या के लिए आत्मबल-मनोबल चाहिए, जो इन दो मासखमण तपस्वियों ने करके दिखाया है। युवावस्था में चंद्रकांत बदामिया ने मासखमण जैसा कठिन तप किया है और प्रीति सामरा ने भी पहला मासखमण कर हिम्मत का परिचय दिया है। दोनों मासखमण तपस्वी की खूब-खूब अनुमोदना करते हैं, उनके आध्यात्मिक जीवन की मंगलकामना करते हैं।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के द्वारा तपस्वियों का अभिनंदन किया गया। बदामिया परिवार से बहिनों ने गीत के माध्यम से तपस्वी की अनुमोदना की। सामरा परिवार से हिरल सामरा ने अपनी माता के पहले मासखमण पर भाव व्यक्त करते हुए मंगलकामना व्यक्त की। अंजु चावत ने बहन के मासखमण पर अनुमोदना करते हुए तप के क्षेत्र में आगे

बढ़ने के लिए अपने प्रति मंगलकामना की। कार्यक्रम का संचालन साध्वी कल्पयश्रीजी ने किया।

सभा के मैनेजिंग ट्रस्टी बाबूलालजी,, महासभा से गुजरात प्रभारी अनिल चंडालिया, आचार्यश्री महाश्रमण चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति, सूरत के महामंत्री नानालाल राठौड़ एवं तेरापंथी सभा, तेरापंथ युवक परिषद, तेरापंथ महिला मंडल के पदाधिकारियों की विशेष उपस्थिति रही।

## उधना

तेरापंथ भवन उधना में बहुश्रुत मुनि उदितकुमारजी के सान्निध्य में अर्जुन धूपिया और केसर देवी गन्ना ने मासखमण (39 दिन) की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। मुनि उदितकुमारजी ने अपने प्रेरणादायी उद्बोधन में त्याग और तपस्या का महत्व बताते हुए कहा- 'भगवान महावीर ने मोक्ष के जो चार साधन बताए हैं, उनमें एक है तप। पूर्वार्जित कर्मों को क्षय करने का यह सशक्त उपाय है परंतु इसे करना उतना आसान नहीं। तपस्या करने के लिए उच्च मनोबल की आवश्यकता होती है। एक उपवास भी जहां कईयों के लिए विशेष चिंतनीय बिंदु बन जाता है, वहां इतनी प्रलंब तपस्या बड़ी सहजता के साथ परिसंपन्न कर लेना, यह क्षयोपशम भाव तथा संकल्प बल से ही संभव है।' मुनिश्री ने तपस्वी भाई बहनों के तप की अनुमोदना करते हुए तपस्वियों को साधुवाद दिया।

मुनि अनंतकुमारजी ने भी अपने उद्गार प्रकट किए। तपस्वियों की अनुमोदना में सभी तपस्वियों के पारिवारिक-ज्ञातिजनों द्वारा गीत का संगान किया गया। तपस्वी अर्जुन धूपिया एवं तपस्विनी केसर देवी गन्ना के तप के उपलक्ष में साध्वी प्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी द्वारा प्रदत्त संदेश का वाचन कर सभा अध्यक्ष बसंतिलाल नाहर ने मंगल कामना अभिव्यक्त की। संपत आंचलिया, मुकेश बाबेल, विनोद भटेवरा, कोमल भलावत ने भी तपस्वियों के प्रति अनुमोदना के भाव व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री सुरेश चपलोट ने किया। इस अवसर पर नेहा श्यामसुखा एवं सुश्री परी बेगवानी ने भी क्रमशः 95 एवं 2 की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। कार्यक्रम में उल्लेखनीय उपस्थिति रही।





## अभातेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन



### शपथ ग्रहण समारोह

#### मालेगांव

तेरापंथ युवक परिषद, मालेगांव का शपथ ग्रहण समारोह साध्वी पुण्यशाला की सान्निध्य में आयोजित किया गया। साध्वी पुण्यशाला द्वारा नवकार महामंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। तेरापंथ युवक परिषद के सदस्यों ने विजय गीत का संगान किया।

तेयुप पूर्व अध्यक्ष श्रेणिक कांकरिया ने २०२३-२०२४ की टीम की घोषणा की एवं सभी को शपथ दिलाई। साध्वी पुण्यशाला ने सभी को संघ व संघपति के प्रति पूर्ण समर्पित रहते हुए तेयुप के सेवा, संस्कार, संगठन रूपी त्रिआयामी उद्देश्यों को आगे बढ़ाने की प्रेरणा दी। नई टीम को उनके सफल कार्यकाल की मंगल कामना दी गई।

### स्वरांजलि प्रतियोगिता

#### विजयनगर, बेंगलुरु

बेंगलुरु के विजयनगर स्थित तेरापंथ भवन में मुनि दीपकुमारजी के सान्निध्य में एवं मुनि काव्यकुमारजी के निर्देशन में स्वरांजलि प्रतियोगिता का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद एवं तेरापंथ महिला मंडल विजयनगर द्वारा किया गया। चार राउंड में प्रतियोगिता आयोजित हुई। बगड़ी टीम प्रथम स्थान पर रही, छापर टीम द्वितीय स्थान पर एवं सिरियारी टीम तृतीय स्थान पर रही। मुनि दीपकुमारजी ने कहा- ऐसी प्रतियोगिताएं ज्ञान संवर्धन करती है। स्वरांजलि अच्छे ढंग से आयोजित हुई है। इसमें मुनि काव्यकुमारजी का निर्देशन एवं अच्छा श्रम रहा है। कार्यक्रम की संयोजना में बरखा पुगलिया, विक्रम बोहरा, अभिषेक कावडिया का योगदान रहा। सभी प्रतिभागियों को पुरस्कार दिए गए। श्रावक-श्राविकाओं की अच्छी उपस्थिति रही।

### मंत्र दीक्षा कार्यक्रम

#### वापी

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा मंत्र दीक्षा कार्यक्रम का आयोजन हुआ। मंत्र दीक्षा का कार्यक्रम ज्ञानशाला प्रशिक्षिका एकता कच्छारा ने संपादित करवाया।

कार्यक्रम में महासभा सदस्य रमेश कोठारी, सभा अध्यक्ष महेंद्र मेहता, तेरापंथ ट्रस्ट अध्यक्ष श्रीचंद दुगड़, अभातेयुप से शाखा प्रभारी कुलदीप कोठारी सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे।

कार्यक्रम के मुख्य सहयोगी सागरमल वागरेचा एवं मंत्र दीक्षा कार्यक्रम सहयोगी रणजीत सुराणा एवं बाहर से पधारे हुए अतिथि विशेष वापी नगर पालिका उपप्रमुख अभय नाहर, समाजसेवी नानजी गुज्जर एवं विश्व हिंदू परिषद, वलसाड उपाध्यक्ष नरेंद्र पायक आदि की उपस्थिति रही। कार्यक्रम के अंत में आभार तेयुप मंत्री भावेश ओस्तवाल ने किया।

### शपथ ग्रहण समारोह

#### ईरोड

साध्वी डॉ गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में तेयुप, ईरोड के सत्र-२०२३-२४ की नई कार्यसमिति का शपथ ग्रहण समारोह तिरुपुर में जैन संस्कार विधि से आयोजित हुआ। जैन संस्कारक की भूमिका चेतन बरडिया, जितेंद्र भंसाळी एवं प्रेम डाकलिया ने निभाई।

साध्वीश्री जी ने नई टीम के सफल कार्यकाल की मंगलकामना करते हुए प्रेरणा प्रदान की। निवर्तमान अध्यक्ष सुभाष बैद ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष महेंद्र भंसाळी को शपथ दिलवाई, जिसके पश्चात महेंद्र भंसाळी ने अपनी टीम को शपथ दिलवाई।

कार्यकारिणी सदस्यों ने संकल्प लिया कि वे भी जैन संस्कार विधि को जन-जन की विधि बनाने में सहयोग करेंगे। कार्यक्रम का संचालन चेतन बरडिया ने किया।

### व्रतों की चेतना जगाएं- शाश्वत प्रकाशपुंज बन जाएं

#### ग्रीन पार्क (दक्षिण दिल्ली)

साध्वी डॉ कुंदनरेखा जी के सान्निध्य तथा तेयुप के तत्वावधान में बारह व्रत कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर साध्वी कुंदनरेखा जी ने कहा कि श्रावक का चौथा सोपान है- सम्यग्दर्शन और पाँचवीं सीढ़ी है- देशव्रत। सम्यग्दर्शन के बिना देशव्रत अर्थात् व्रतों के स्वीकरण रूप चेतना का जागरण नहीं हो सकता। पदार्थों की अंतहीन भीड़ ने मानव मन को विमोहित किया है।

आसक्ति, कषाय की प्रबलता, हर क्षण नया पाने की चाह ने जहां इंसान को भटकाया है, वहां भगवान महावीर ने बारह व्रतों की संयोजना कर मनुष्य को भटकने से बचाया भी है। बारह व्रत ऐसे शस्त्र हैं, जो पापों का सफाया कर सुंदरतम तनावमुक्त जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं। सभी व्रतों को अपनाएं, ज्ञानवान और प्रकाशवान बन जाएं, मंगलकामना।

साध्वी सौभाग्यशाला जी ने कहा कि 'व्रत' दिखावा और प्रदर्शन नहीं, आत्म प्रेरणा से स्वीकृत आत्मदर्शन है। इस अवसर पर उन्होंने एक गीत का संगान किया। साध्वी कल्याणशाला जी ने कार्यक्रम का प्रारंभ कर श्रावक समाज को ध्यान के माध्यम से प्रेरित किया। तेयुप, दिल्ली द्वारा विजयगीत का संगान किया गया। दिल्ली तेयुप के मंत्री अमित डूंगरवाल ने स्वागत भाषण और तत्त्व प्रचेता हेमा चोरडिया ने अपने विचार प्रस्तुत किए। पारस ने आभार ज्ञापन किया। साध्वीश्रीजी की प्रेरणा से लगभग ५० भाई-बहनों ने बारह व्रतों को स्वीकार किया।

### 'पवित्र रिश्ता, सात फेरों का' दंपति कार्यशाला

#### विजयनगर-बेंगलुरु

तेरापंथ भवन में मुनि दीपकुमारजी के सान्निध्य में 'पवित्र रिश्ता, सात फेरों का-दंपति कार्यशाला' का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद विजयनगर द्वारा हुआ, जिसमें प्रशिक्षक मुकेश भंडारी रहे। ३७ दंपतियों ने कार्यशाला में संभाषिता दर्ज की। मुनि दीपकुमारजी ने कहा- 'भारतीय संस्कृति में दांपत्य जीवन आदर्श परंपरा रही है। दंपति परिवार की संपत्ति है। दांपत्य जीवन में आज दरार पड़ रही है, टूटन आ रही है। दांपत्य जीवन शांतिपूर्ण रहे, इसके लिए विश्वास, समय, संवाद, धन्यवाद, सहिष्णुता का होना जरूरी है। रिश्तों की मजबूती के लिए विश्वास एक आधार स्तंभ होता है। विश्वास नहीं है तो सात फेरों का संबंध टूटने में ७ मिनट की भी देरी नहीं लगती। रिश्तों में एक-दूसरे के लिए समय समर्पित करना अपेक्षित होता है। संवाद से समस्याओं का समाधान हो सकता है। धन्यवाद का भाव बना रहना चाहिए। सहनशीलता रिश्ते की अखंडता के लिए सबसे जरूरी है। दांपत्य जीवन में एक-दूसरे के प्रति आदर का भाव रखना चाहिए।'

प्रशिक्षक मुकेश भंडारी ने संवाद, आदर, समय, धैर्य, अपेक्षा के संदर्भ में बताते हुए टकराव से बचने की बात कही एवं अनूठे तरीके से सभी युगलों को एक्टिविटीज कराई। वीडियो एवं वार्तालाप के माध्यम से दांपत्य जीवन में सफलता की बातें बताईं। हास्य एवं एक्टिविटी का समावेश भी हुआ। कार्यक्रम में तेयुप अध्यक्ष राकेश पोखरना ने स्वागत भाषण दिया। तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष मंजु गादिया ने शुभकामनाएं व्यक्त की। प्रशिक्षक का परिचय संयोजक संजय भटेवरा ने दिया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री कमलेश चोपड़ा ने किया। आभार ज्ञापन संगठन मंत्री पवन बैद ने किया।

### तप अभिनंदन समारोह

#### कानपुर

साध्वी संगीतश्रीजी के पावन सान्निध्य में तपस्वी भाई अजीत चोरडिया के १५ की तपस्या और तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष दिलीप मालू के ६ की तपस्या के अनुमोदन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्रीजी के महामंत्रोच्चार से हुआ। तेरापंथ महिला मंडल ने मंगलाचरण की प्रस्तुति दी। तेरापंथी सभा अध्यक्ष धनराज सुराणा, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा शालिनी बुच्चा, पूनमचंद सुराणा, हर्ष बोधरा, ऋतु जैन एवं प्रियंका भूतोडिया ने तपस्वियों की अनुमोदना में अपने विचार और गीतिका प्रस्तुत की। तपस्वी दिलीप मालू के परिवार की ओर से माणकचंद मालू, प्रभा मालू, कौशल, कुशाग्र मालू और बहन बबीता मणोत ने अपने विचार रखे। साध्वी मुदिताश्रीजी ने अपने वक्तव्य में कहा कि तपस्वी भाइयों से प्रेरणा लेकर प्रत्येक परिवार में तपस्या की जोत जलानी चाहिए। साध्वी शांतिप्रभाजी ने एक मधुर गीतिका का संगान किया। साध्वी कमलविभाजी ने कहा कि कर्मों की निर्जरा का मार्ग है तपस्या। काया तपती है तो अंदर से कर्म नष्ट होते हैं। साध्वी संगीतश्रीजी ने कहा कि आगमों में भी तप की बहुत महिमा बताई गई है। जो तपस्वी का अनुमोदन करता है, वह भी निर्जरा करता है।

रसनेंद्रियों पर नियंत्रण रखना कोई सरल बात नहीं है। साध्वीश्रीजी ने श्रावक-श्राविकाओं को तप के मार्ग पर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। तपस्वियों को तेरापंथी सभा द्वारा प्रशस्तित पत्र और साहित्य प्रदान कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन सभा मंत्री संदीप जम्मड ने किया।

### मुनि शांतिप्रिय जी के अनशन की संपन्नता पर

#### :: शासनश्री मुनि विजय कुमार ::

शांतिप्रिय मुनि ने किया,  
बड़ा गजब का काम,  
अपूर्व संथारा किया,  
बना यशस्वी नाम।।

सेवा, जप, तप में सदा,  
रहते थे वे लीन,  
घेरा यद्यपि रोग ने,  
किंतु बने नहीं दीन।।

वर्ष बहोत्तर में किया,  
संयम पथ स्वीकार,  
कृपा हुई गुरुराज की,  
तभी बने अणगार।।

इट्यासी की उम्र में,  
मन में साहस धार,  
अनशन पचखा भाव से,  
किया आत्म उद्धार।।

समपरिणामी बन रहे,  
धन्य-धन्य मुनिराज,  
की सेवा मुनिवृंद ने,  
मिला सुगुरु का स्वाहाज।।





## तेरापंथ किशोर मंडल के त्रिदिवसीय 18वें राष्ट्रीय अधिवेशन

# ‘नवोन्मेष-एलिवेटिंग यू’ का हुआ भव्य आयोजन

## मुंबई के नंदनवन में पूज्य सन्निधि एवं प्रेरणा पाथेय प्राप्त कर धन्य बने किशोर

महातपस्वी परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में तेरापंथ किशोर मंडल का 92वां राष्ट्रीय अधिवेशन ‘नवोन्मेष-एलिवेटिंग यू’ दिनांक २८-२९-३० जुलाई २०२३ को मुंबई के नंदनवन में आयोजित हुआ, जिसमें देश के विभिन्न क्षेत्रों से ६४ किशोर मंडलों से लगभग १२०० किशोरों की उपस्थिति रही।

परम पूज्य गुरुदेव के श्रीमुख से मंगल पाठ एवं अभातेयुप के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि योगेशकुमार जी द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ अधिवेशन का शुभारंभ हुआ। अभातेयुप के कर्मठ एवं ऊर्जावान राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा द्वारा अधिवेशन शुभारंभ की घोषणा की गई। अभातेयुप के उपाध्यक्ष प्रथम रमेश डागा, महामंत्री पवन मांडोत, सहमंत्री प्रथम अनंत बागरेचा, सहमंत्री द्वितीय एवं अधिवेशन संयोजक भूपेश कोठारी, कोषाध्यक्ष भरत मरलेचा, निवर्तमान अध्यक्ष संदीप कोठारी, आचार्यश्री महाश्रमण चतुर्मास व्यवस्था समिति, मुंबई के अध्यक्ष मदनलाल तातेड़, महामंत्री सुरेन्द्र कोठारी, महामंत्री महेश बाफना, तेरापंथ किशोर मंडल के राष्ट्रीय प्रभारी विशाल पितलिया, राष्ट्रीय सह-प्रभारी मयंक धाकड़, अभातेयुप टीम के साथियों आदि की गरिमामयी उपस्थिति में अधिवेशन का शुभारंभ हुआ।

अभातेयुप के कर्मठ राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा ने देशभर से उपस्थित किशोरों का अभातेयुप परिवार की ओर से स्वागत एवं अभिनंदन किया। उन्होंने किशोरों को जीवन में संस्कारों के साथ आगे बढ़ते हुए संघ व संघपति के प्रति सदैव समर्पित रहने की प्रेरणा दी एवं उन्हें संगठन की विभिन्न आध्यात्मिक और सामाजिक गतिविधियों के माध्यम से अपना व्यक्तित्व निखारने की बात कही।

सक्रिय महामंत्री पवन मांडोत ने कहा कि अधिवेशन के माध्यम से किशोरों को गुरु सन्निधि का दुर्लभ अवसर प्राप्त हो रहा है। उपस्थित किशोर इस अधिवेशन के प्रत्येक पल का सदुपयोग करें एवं पूज्य सन्निधि से अपने जीवन में सर्वांगीण विकास का संकल्प ग्रहण करके प्रस्थान करें। महामंत्री द्वारा अधिवेशन के थीम सौंन्य का अनावरण किया गया। तत्पश्चात

किशोर गायक ऋषि दुगड़ द्वारा लाइव थीम सौंन्य प्रस्तुत किया गया।

अधिवेशन के प्रथम दिवस पर प्रातःकालीन ‘हील विदिन’ सत्र में मुनि जागृतकुमारजी द्वारा किशोरों को ध्यान के प्रयोग करवाये गये। ‘हाउ टू बी प्रेजेंटेटिव?’ विषय पर आयोजित द्वितीय सत्र में बैंगलौर से समागत लाइफ कोच अरविंद मांडोत ने किशोरों को प्रेरक टिप्स प्रदान किये।

तीसरे सत्र में दो अलग-अलग वर्कशॉप का आयोजन किया गया, जिनमें किशोरों को ‘वर्ल्ड ऑफ वेब’ वर्कशॉप में यूट्यूबर उमर कुरैशी द्वारा वेबसाइट की उपयोगिता आदि के संदर्भ में एवं ‘एस्केलेटर’ वर्कशॉप में फाइनेंस एक्सपर्ट गजेन्द्र कोठारी द्वारा फाइनेंस से संबंधित विषयों पर मार्गदर्शन दिया गया।

डॉक्टर संजय रानाडे (पॉलिटिकल एनालिस्ट एंड फॉर्मर हेड ऑफ द डिपार्टमेंट ऑफ कम्प्युनिकेशन एंड जर्नलिज्म, यूनिवर्सिटी ऑफ मुंबई) द्वारा ‘मॉडल पार्लियामेंट’ विषय पर आयोजित चतुर्थ सत्र में संसद की कार्यप्रणाली के बारे में किशोरों को बहुत ही रोचक तरीके से जानकारी दी गई।

पांचवे सत्र में पूज्यप्रवर के सान्निध्य में ‘धर्म पर चर्चा’ सत्र का आयोजन हुआ जिसका प्रारंभ पूज्यप्रवर के मंत्रोच्चार के साथ हुआ। अध्यक्ष पंकज डागा द्वारा सान्निध्य प्रदान करवाने के लिये श्रीचरणों में कृतज्ञता ज्ञापित की गई एवं महामंत्री पवन मांडोत द्वारा जिज्ञासा-समाधान सत्र की जानकारी प्रस्तुत की गई। सत्र का संचालन ब्रिगेड मेम्बर ऋषि दुगड़ द्वारा

किया गया। किशोरों ने श्रीचरणों में अपनी जिज्ञासाएं प्रस्तुत की एवं पूज्यप्रवर के श्रीमुख से उनका प्रेरक समाधान प्राप्त कर धन्यता की अनुभूति की।

प्रथम दिवस के अंतिम सत्र ‘जन्मदाता’ में किशोर संगायक ऋषि दुगड़ द्वारा माता-पिता को समर्पित भक्ति संध्या का कार्यक्रम हुआ।

अधिवेशन के द्वितीय दिवस प्रातः सभी किशोर मंडलों द्वारा वर्ष भर में किये गये कार्यों को प्रतिवेदन के रूप में पूज्य गुरुदेव के श्रीचरणों में प्रस्तुत किया गया। पूज्य गुरुदेव ने महती कृपा कर प्रस्तुत प्रतिवेदनों को निहारा तो किशोर भी श्रीचरणों में श्रद्धानत होकर कृतज्ञता ज्ञापित कर रहे थे। ‘फाइंडर्स कीपर्स ट्रेजर हंट’ आयोजित किया गया, जिसमें भी अनेकों किशोर मण्डलों ने भाग लिया।

दूसरे सत्र में मंचीय कार्यक्रम पूज्यप्रवर की सन्निधि में आयोजित हुआ। अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा ने अभातेयुप के निर्देशन में किशोर मंडल की गतिविधियों के बारे में अवगति प्रदान की। अभातेयुप महामंत्री पवन मांडोत ने भी अपने भाव व्यक्त किये। किशोर मंडल के राष्ट्रीय प्रभारी विशाल पितलिया ने श्रीचरणों में अपने भाव व्यक्त करते हुए किशोर मंडल के अंतर्गत द्वारा वर्ष भर में किए गये विशेष कार्यों की गति-प्रगति की जानकारी प्रस्तुत की।

तीसरे सत्र के प्रारंभ में मुनि सत्यकुमारजी व मुनि नयकुमारजी ने किशोरों को अपना मंगल उद्बोधन प्रदान किया। ‘फ्यूचर कम्पास’ पैनल डिस्कशन आयोजित हुआ जहां पैनलिस्ट जस्टिस

गौतम चौरड़िया, आयुष्मान पंडिता, ललित छाजेड़ एवं देवेन्द्र डागलिया ने किशोरों को अपने जीवन में सही मार्ग चुनने के लिए प्रेरित किया व मार्गदर्शन दिया।

चौथे सत्र में संदीप गादिया ने ‘साईबर क्राइम’ विषय पर आयोजित कार्यशाला के माध्यम से किशोरों को सचेत किया। आयुष्मान पंडिता ने सभी युवाओं को ‘ऑटोमेटेड इमेजिनेशन’ विषय पर आयोजित कार्यशाला के द्वारा टेक्नोलॉजी के युग को समझाया।

दूसरे दिवस के अंतिम सत्र में ‘मॉडल पार्लियामेंट’ का आयोजन हुआ, जिसमें संसद का प्रारूप सभी किशोरों के सामने दर्शाया गया एवं जी२० और रिजर्वेशन जैसे अहम मुद्दों पर एक संसद चर्चा की गई।

तृतीय दिवस के दूसरे सत्र में ‘एमआईसी चेक इवेंट’ का आयोजन हुआ, जिसमें देश भर से चुने हुए किशोरों का फाइनल राउंड आयोजित हुआ। बैंगलौर किशोर मंडल से आदित्य मांडोत ने ‘मास्टर ऑरटर’ का खिताब हासिल कर प्रथम स्थान प्राप्त किया।

अंतिम सत्र में किशोर मंडलों को अभातेयुप द्वारा निर्देशित सेवा-संस्कार-संगठन के अंतर्गत उनके द्वारा वर्ष भर में किये गये विशेष कार्यों के लिये चयनित कर सम्मानित किया गया। इस क्रम में चयनित तेरापंथ किशोर मंडल उधना को सर्वश्रेष्ठ, एवं सेवा में श्रेष्ठ बारडोली, संस्कार में श्रेष्ठ गंगाशहर तथा संगठन में श्रेष्ठ सूरत किशोर मंडल को सम्मानित किया गया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा द्वारा तेरापंथ किशोर मंडल के राष्ट्रीय प्रभारी विशाल पितलिया, सह-प्रभारी मयंक

धाकड़, अभातेयुप टीम से अरविंद पोकरना, श्रेणिक कुचेरिया, टेक्निकल टीम से इंदर छाजेड़, ऋषि दुगड़, आर्यन रांका व सभी ब्लू ब्रिगेड मेम्बर्स का सम्मान किया गया।

तेरापंथ किशोर मंडल का नाम हुआ एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में दर्ज

अधिवेशन के तृतीय व अंतिम दिवस पर तेरापंथ किशोर मंडल ने एक नव इतिहास का सृजन किया। प्रातः ४:०० बजे लगभग ११०० से अधिक किशोरों ने लगभग ३ घंटे की कड़ी मेहनत के साथ दुनिया का सबसे विशालतम ह्युमन जैन फ्लैग बनाकर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। तेरापंथ किशोर मंडल की इस उपलब्धि के लिये उसका नाम एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में दर्ज हुआ। यह जैन ध्वज ११०० वर्गफुट से अधिक के क्षेत्र में बनाया गया।

अधिवेशन में समागत किशोरों की आवास, भोजन, आयोजन आदि व्यवस्थाओं में आचार्यश्री महाश्रमण चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष मदनलाल तातेड़ के नेतृत्व में व्यवस्था समिति की पूरी टीम का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ।

अभातेयुप के पूर्व अध्यक्ष बी.सी. जैन भलावत, निवर्तमान अध्यक्ष संदीप कोठारी, पूर्व उपाध्यक्ष महेश बाफना आदि भी व्यवस्था समिति की व्यवस्थाओं में विभिन्न दायित्वों से जुड़े होने के कारण उनका भी विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। अभातेयुप सहमंत्री एवं अधिवेशन संयोजक भूपेश कोठारी ने प्रदत्त दायित्व का निर्वहन करते हुए निष्ठापूर्ण श्रम किया।







## पूज्य सन्निधि में दो साध्वियों के मासखमण तप

### दोनों विशाल विशालता को प्राप्त करें : आचार्यश्री महाश्रमण



३१ जुलाई, २०२३

नन्दनवन-मुम्बई

जिन शासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मंगल देशना प्रदान कराते फरमाया कि भगवती सूत्र में प्रश्न किया गया है- भन्ते! मनुष्य आयुष्य कर्म शरीर प्रयोग बंध किस कर्म के उदय से होता है। उत्तर दिया गया कि प्रकृति भद्रता, प्रकृति विनीतता, सानुक्रोष्टा, अमत्सरता, मनुष्य आयुष्य कर्म शरीर बंध के मुख्य हेतु हैं।

मनुष्य गति का आयुष्य बंधना और संगी मनुष्य होना एक दुर्लभ जीवन को प्राप्त करना होता है। मनुष्य गति कर्म बंधन के चारों कारण शुभात्मक है, सद्गुणात्मकता है। पंचम आरे में तो मनुष्य का आयुष्य बहुत कम है। १०० वर्ष का आयुष्य भी बहुत ही कम मनुष्यों को मिलता है। हमारे धर्मसंघ में तो साध्वीश्री बिदामांजी १०० वर्ष से ऊपर की साध्वीजी है। एक ही चारित्रात्मा १०५ वर्ष की हुई है। जीवन में भद्रता रहे। प्रकृति से सरल होना, भीतर में कोई छल-कपट नहीं होना प्रकृति भद्रता है।

**नमन खमन अरु दीनता,  
सबका आदर भाव।  
कहे कबीरा वही बड़ा,  
जाका बड़ा स्वभाव।**

आकृति कितनी सुन्दर है, ये अलग बात है पर प्रकृति कैसी है? प्रकृति अच्छी है, तो आदमी अच्छा है। नम्रता,

क्षमाशीलता और अपने आराध्य के प्रति भक्ति का भाव है, बड़ों के प्रति आदर का भाव व्यक्ति के जीवन को अच्छा बनाते हैं। लघुता से प्रभुता प्राप्त की जा सकती है। अहंकार का भाव न हो। साधु-साध्वियों के संदर्भ में पूज्य गुरुदेव ने फरमाया कि गुरु की आज्ञा में रहना अच्छी बात है। जीवन में विनय का भाव रहे। कोई साधु-साध्वी दीक्षा में बड़े हैं, ज्ञान में बड़े हैं, पद से बड़े हैं तो उनको वैसा ही सम्मान दें। सानुक्रोशता यानि दया रखना, कृपा रखना। ईर्ष्या न रखें। अनिर्ष्या भाव हो। मनुष्य आयुष्य कर्म का बंध मिथ्यात्वी ही कर सकता है, सम्यकत्वी नहीं। सम्यकत्वी तो वैमानिक देवलोक का ही आयुष्य बंध पुलिंग अवस्था में ही कर सकेगा। जीवन में भद्रता रहे। हम सद्गुणों का विकास करें, यह काम्य है। आज तेरस और चतुर्दशी संयुक्त है।

परमपुज्य आचार्य भिक्षु की मासिकी जन्म तिथि और पुण्य तिथि भी है। पूज्यवर ने हाजरी का वाचन कराते हुए प्रेरणाएं फरमायी। साधु- साध्वीवृन्द ने लेख पत्र का वाचन किया।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आज के प्रवचन कार्यक्रम में साध्वी विशालयशाजी और साध्वी विशाल प्रभाजी के मासखमण तप के पारणे के अवसर पर मंगल आशीर्वाद प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारी दो साध्वियों का आज २८-२८ दिन का मासखमण हो गया। इतनी छोटी

उम्र में तपस्या की है इनको नजर न लगे। पहले भी लंबी तपस्या की है। विशाल प्रभा ने तो गृहस्थ वेश में ही मां के साथ दीक्षा ले ली थी। पूज्यवर ने आगे फरमाया कि दोनों साध्वियों का नाम विशाल है, विशालयशा और विशालप्रभाजी। इनकी तपस्या विशाल होती रहे। ज्ञान भी विशाल होता रहे, सेवा भी विशाल करती रहे और साधना में भी विशालता को प्राप्त करें।

महेन्द्र गेलड़ा, संतोष धोका, अशोक बाफणा, सज्जन देवी चपलोट, नीतू कोठारी, विकास हिरण, उषा बांठिया, रीया सोलंकी, सविता मोटावत, रेखा मोटावत, डॉ. दीपक डागलिया, ऋद्धि मरलेचा, लक्ष्मी सिंघवी, आशा धाकड़, स्नेहलता कोठारी, गौतम बोहरा, संजय हीरावत एवं टीना राठौड़ ने मासखमण की तपस्या के प्रत्याख्यान परमपावन आचार्यवर से ग्रहण किये। पूज्यवर से सुशीला गोखरु, राकेश डुंगरवाल, विमल खीमसेर, सरला चौधरी, सुरेन्द्र सालेचा ने भी तपस्या के प्रत्याख्यान स्वीकार किये।

अणुविभा द्वारा अक्टूबर में आयोजित अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के बैनर का अनावरण परमपूज्य के सान्निध्य में हुआ। श्रद्धानिष्ठ श्राविका गदु देवी बोधरा की स्मृति में प्रकाशित पुस्तक 'समता की सुगंध' पूज्यवर के चरणों में समर्पित की गई। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

## ऋजुता और सरलता से आत्मा की शुद्धि संभव : आचार्यश्री महाश्रमण



०२ अगस्त २०२३

नन्दनवन-मुम्बई

तेरापंथ धर्मसंघ के दिव्य दिवाकर आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आर्हत वाणी की अमृत वर्षा कराते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में प्रश्न किया गया है- शुभ नाम कर्म शरीर प्रयोग बंध किस कर्म के उदय से होता है। नाम कर्म के द्वारा शरीर की सुन्दरता, वाणी का प्रभाव, तीर्थकर नाम कर्म बंध वाली स्थितियां हो सकती है। किसी की बात को लोग स्वीकार कर लेते हैं, किसी की बात का लोग स्वीकरण नहीं करते, ये सारा नाम कर्म का अपना क्षेत्र है।

नाम कर्म के दो प्रकार हैं- शुभ नाम कर्म और अशुभ नाम कर्म। शुभ नाम कर्म का उदय होने पर अनुकूल स्थितियां प्राप्त होती है। अशुभ नाम कर्म का उदय होने पर जीव को प्रतिकूल परिस्थितियां प्राप्त होती है। भगवती सूत्र में शुभ नाम कर्म शरीर प्रयोग बंध के कारण बताए गये हैं- काया की ऋजुता, भाव की ऋजुता, भाषा की ऋजुता। एक शब्द में कारण समझें तो वह है- ऋजुतापूर्ण व्यवहार। ऋजुता और सच्चाई का गहरा संबंध है। झूठ और कपट का जोड़ा है एवं सच्चाई और सरलता का जोड़ा है। व्यक्ति को बच्चे की तरह सरल होना चाहिए किन्तु बच्चे की

तरह नादान नहीं होना चाहिए। सार रूप में कहा जाए तो सरलतापूर्ण व्यवहार हो तो शुभ नाम कर्म का बंध होता है। अशुभ नाम कर्म शरीर प्रयोग बंध का कारण है- कटुता, वक्रता। मायाचार, वंचनापूर्ण व्यवहार इसके कारण हैं। यह सब पाप कर्म का बंध कराने वाले होते हैं। इससे व्यक्ति को जीवन में प्रतिकूलताएं प्राप्त होती है।

ऋजुतापूर्ण व्यवहार है, वह हमारी आत्मा के उत्थान का कारक है। वक्रता आत्मा का पतन करने वाला बन सकती है। इसलिए हमें वक्रता से बचने का प्रयास करना चाहिये। सरलता से शुद्धि होगी और शुद्ध आत्मा ही उत्थान की दिशा में आगे बढ़ सकती है। कर्म बंधे हैं तो भोगना ही पड़ेगा। प्रायश्चित्त कर कर्म भोगने से बच सकते हैं। हमें कथनी-करनी में समानता और जीवन में ऋजुता रखने का प्रयास करना चाहिये। कालूयशोविलास का सुन्दर विवेचन कराते हुए पूज्यवर ने पूज्य कालूगणी के मालवा प्रदेश पधारने के प्रसंग को समझाया।

मासखमण की तपस्या के क्रम में पूज्यवर ने अंकिता बड़ाला, डिंपल बड़ाला एवं सारिका बड़ाला को उनकी तपस्या के प्रत्याख्यान करवाये। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

## तीन रत्न हैं- ज्ञान, दर्शन एवं चारित्र : आचार्यश्री महाश्रमण

०६ अगस्त ०२०२३

नन्दनवन, मुम्बई

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आगमवाणी की अमृत वर्षा का रसास्वादन कराते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में प्रश्न किया गया कि भन्ते! आराधना कितने प्रकार की होती है। उत्तर में कहा गया है- गौतम! आराधना के तीन प्रकार प्रज्ञप्त हैं- ज्ञानाराधना, दर्शनाराधना, चरित्राराधना। यह तीन महत्वपूर्ण तत्व हैं- ज्ञान, दर्शन और

चारित्र। यह तीन रत्न हैं। धरती पर तीन रत्न बताये गये हैं- जल, अन्न और सुभाषितम्। आर्ष वाणी अपने आप में रत्न है। इनमें ज्ञान है, समस्याओं के समाधान का पथदर्शन मिल सकता है। अच्छी भाषा भी अपने आप में एक रत्न हो सकती है। आदमी के पास बोलने की अच्छी शक्ति है, वह भी रत्न है। रत्न है, उनका अपव्यय न हो। जो गूढ़ लोग हैं, वे पत्थर के टुकड़ों को रत्न कहते हैं। अपनी जाति में जो उत्कृष्ट होता है, वह रत्न होता

है। ज्ञानाराधना, दर्शनाराधना और चारित्राराधना तो ऐसे रत्न हैं कि पाषाण रत्न इनके सामने कुछ नहीं है। स्वाध्याय के द्वारा श्रुत की आराधना की जा सकती है।

ज्ञानशाला के माध्यम से भी छोटे बच्चों को ज्ञान दिया जाता है। ज्ञान का कोई पारावार नहीं है। कितने विषय और भाषाओं के ग्रन्थ भरे पड़े हैं, पर हमारे पास समय सीमित है। आगे तो आयुष्य और छोटा होने वाला है। सांसारिक

अनेक कार्यों से ज्ञान प्राप्ति में अवरोध आ सकता है। जो सारभूत ज्ञान है, उसे ग्रहण करने का प्रयास करें। हम जीवन में ज्ञानाराधना का प्रयास करें। सम्यकत्व हमारा पुष्ट रहे। सच्चाई के प्रति श्रद्धा का भाव रहे। जो जिनेश्वर भगवान ने प्रवेदित किया है- वह सत्य है, सत्य ही है। सच्चाई के प्रति हमारी आस्था रहे। देव, गुरु और धर्म के प्रति हमारी अटूट श्रद्धा रहे। सम्यक दर्शन अच्छा रहे।

चारित्राराधना भी हमारी अच्छी

रहे। साधु तो सर्व चारित्र युक्त होते हैं, पर गृहस्थ में देशचारित्र हो सकता है। सामायिक की आराधना भी देश चारित्र की साधना है। शनिवार की सामायिक ७ से ८ बजे सायं अवश्य करनी चाहिये। चाहे देश हो या विदेश धर्माराराधना तो करनी चाहिये। यह तो एक पूंजी है जो आगे तक काम आने वाली है। एक उम्र के बाद आगे का भी हमें चिन्तन रखना चाहिये।

पृष्ठ ३ पर शेष ...